दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ
उत्तर प्रदेश

उद्घोष

सप्तम संस्करण

त्रैमासिक ई-पत्रिका

welcome

2023

अक्टूबर - दिसम्बर 2022

संपादकीय समिति

डॉ नृपेन्द्र सिंह
अध्यक्ष, दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ, उत्तर प्रदेश
संरक्षक : उद्घोष, त्रैमासिक ई–पत्रिका

सम्पादक

श्री नरेन्द्र विक्रम सिंह
सम्पर्क सूत्र : 7398372302

श्री भागवत शुक्ल
सम्पर्क सूत्र : 9936595999

सह-सम्पादक

श्री सर्वेश कु0 गौतम
जनपद न्यायालय, औरैया

श्री उमेश चन्द्र जायसवाल
जनपद न्यायालय, बस्ती

श्री अरविन्द कु0 मिश्र
जनपद न्यायालय, इलाहाबाद

श्री ऋषि यादव
जनपद न्यायालय, फर्रूखाबाद

श्री महेश्वर किशोर सिंह
जनपद न्यायालय, गोरखपुर

सदस्य सम्पादक मंडल

श्री राजकुमार खरवार
जनपद न्यायालय, बांदा

श्री सिद्धार्थ पाठक
जनपद न्यायालय, सुलतानपुर

श्री समरजीत सिंह
जनपद न्यायालय, बस्ती

श्री अनुज वर्मा
जनपद न्यायालय, औरैया

श्री बृजभान कुशवाहा
जनपद न्यायालय, गाज़ीपुर

श्री अविनाश राय
जनपद न्यायालय, संतकबीरनगर

श्री अभिषेक श्रीवास्तव
जनपद न्यायालय, गोरखपुर

श्री अनूप सिंह
जनपद न्यायालय, बस्ती

श्री गोपाल तिवारी
जनपद न्यायालय, मैनपुरी

श्री दीपक यादव
जनपद न्यायालय, सहारनपुर

संपादकीय

साथियों,

हमने आप सबके सहयोग से ***उद्घोष*** की प्रस्तुति का जो प्रयास जिस सोच के साथ किया था, उद्घोष को आप सबने मिलकर उससे अधिक ऊंचाइयों तक पहुंचा दिया है ।

मेरी जानकारी के अनुसार सेवा सांगठनिक दृष्टिकोण से हम वह पहले संघ बन गए है जो अपनी पत्रिका का नियमित प्रकाशन कर रहा है। उद्घोष के माध्यम से हमारे विचारों की अभिव्यक्ति तो होती ही है, साथ ही हम अपने विचारो को समाज के सम्मुख एकीकृत रूप से भी प्रस्तुत कर सकने में समर्थ हुए है। आप सबकी रचनाशीलता और अभिव्यक्ति अद्वितीय है लेखकों के साथ पत्रिका को सराहने में पाठक वर्ग का भी बड़ा योगदान होता है।

संपादक मंडल की ओर से मैं उद्घोष का नया अंक आप सबको समर्पित कर रहा हूं आशा है कि इस अंक में संकलित विषय वस्तु और कविताओं इत्यादि को आपका स्नेह प्राप्त होगा।

आपका

नरेंद्र विक्रम सिंह

मुख्य संपादक

महासम्मेलन और हम

सम्मानित साथियों,

मुजफ्फरनगर की बैठक में पारित प्रस्तावों में हमने अपनी समस्याओं पर मुखर होते हुए अपने न्याय हित में आंदोलन की रूपरेखा तय की, इस रूपरेखा में हमने 02 अक्टूबर 2022 को जनपद मुख्यालय पर अधिकार प्राप्ति पदयात्रा का आयोजन कर ज्ञापन सौंपे। इस अधिकार प्राप्ति पदयात्रा को आप सबने मिलकर अपेक्षा से अधिक सफल बनाया फिर अगले चरण में हम सबने मिलकर महासम्मेलन की तैयारियां प्रारंभ की और विभिन्न मीडिया स्रोतों पर महासम्मेलन की गूंज हुई, अभी हम तैयारियों में लगे थे और हम दुखित भी थे कि हम जिनके अधीनस्थ है वो हमे सुन ही नही रहे और हमारी पीड़ा बढ़ती ही जा रही, हम उपेक्षित सा महसूस कर रहे थे। इसी मध्य माननीय मुख्य न्यायमूर्ति महोदय के संज्ञान में समस्त बाते आने पर हमे अपनी समस्याओं और उनके निराकरण पर संघ के प्रस्ताव पर चर्चा हेतु श्रीमान महानिबंधक महोदय की ओर से पत्र प्राप्त हुआ, दिनांक 21-11-2022 को लगभग चार घंटे कर्मचारी संघों के साथ माननीय न्यायालय की ओर से वार्ता की गई। यह प्रथम अवसर था कि कर्मचारी समस्याओं पर इतनी लम्बी और सकारात्मक वार्ता हुई, हमे आश्वस्त किया गया कि माननीय न्यायालय हमारी समस्याओं का निस्तारण त्वरित गति से करेगा, इस वार्ता के उपरांत हमने संयुक्त रूप से विचार करते हुए महासम्मेलन को स्थगित करने की घोषणा की और आप सबका साथ भी हमे हर बार की तरह प्राप्त हुआ।

बहुत ही हास्यास्पद रहा कि कुछ दो चार व्यक्ति जो पहले मुजफ्फरनगर की बैठक टालने में लगे थे फिर महासम्मेलन के विरोध में थे इस बार महासम्मेलन स्थगन पर भी वो विरोध में ही थे। जबकि उनके द्वारा कोई सहयोग भी नही था, संघ उनके असहयोग को ही उनका सहयोग मानता है क्योंकि जिसके पास जो होता है, वह वही दे सकता है। नकारात्मक व्यक्तियों से स्कारात्मक अपेक्षा कभी नही करनी चाहिए और संघ ने भी ऐसा नही किया।

साथियों हमारा उद्देश्य कभी भी यह नहीं रहा कि हम न्याय प्रशासन में कोई समस्या के रूप में खड़े हो जाएं लेकिन यदि हमारी उपेक्षा हुई हमारे साथ अन्याय हुए तो हम न्यायिक कर्मचारी है न्यायः मम धर्मः के आधार पर हम अडिग होंगे और स्वयं के साथ हो रहे अन्याय के खिलाफ खड़े ही होंगे और न्याय पा कर ही रहेंगे। आने वाला वर्ष 2023 बहुत ही महत्वपूर्ण वर्ष होने जा रहा है इस वर्ष में संघ समस्या समाप्ति और संघर्षों की नई गाथा लिखने का प्रयास करेगा, आप सबका सहयोग मुखरता के साथ अपेक्षित है, जो जहां है जिस भी तरीके से हमारा साथ दे सकता है सभी तैयार रहें। इस वर्ष के प्रारंभ में हम पुरानी पेंशन बहाली मुद्दे पर राष्ट्रीय कार्ययोजना, संविदा भर्ती पर रोक, संविदा नियमतीकरण के विषय पर अन्य संघों से समन्वय बनाते हुए बड़ा आंदोलन खड़ा करने और उसमे तन मन धन से जुट जाने को तत्पर होंगे।

वक्त आ गया है कि हर अन्याय के विरुद्ध ललकार हो क्योंकि हमे अगली पीढ़ी के नौजवानों को जवाब भी देना है कि जब परिस्थितियां प्रतिकूल थी तब हमने संघर्ष गाथा लिखी हम हाथ पर हाथ धरे बैठे नही रहे। मैं आप सबका आह्वान करता हूँ नववर्ष पर शपथ लीजिए कि प्रत्येक अन्याय के विरुद्ध मुखर होंगे ।

अंत में आप सबको नववर्ष की शुभकामनाएं देता हूं

आपका

नरेंद्र विक्रम सिंह

प्रांतीय महासचिव
दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ
उत्तर प्रदेश

अंतर्राष्ट्रीय नववर्ष पर दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ उत्तर प्रदेश की पत्रिका उद्घोष के प्रकाशन व संघ के सफलता की ओर बढ़ते कदम पर शुभकामनाएं

उत्तर प्रदेश दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ के संपूर्ण प्रिय साथियों, मुझे प्रांतीय संयुक्त सचिव सर्वप्रिय भागवत शुक्ल जी द्वारा सूचना मिली कि संघ की त्रैमासिक ई-पत्रिका **उद्घोष** का प्रकाशन होने जा रहा है, जान कर कि अंतर्राष्ट्रीय नए वर्ष पर पत्रिका संघ के प्रयास से प्रकाशित होने जा रही है जो अपना एक नया कीर्तिमान स्थापित करने में सफलता प्राप्त करे ऐसा हमारा आशीर्वाद है ! हम संघ के तीनों संगठन के प्रति भी आभारी हैं कि उन्होंने समय की आवश्यक्ता को समझा और नेतृत्व से ऊपर उठकर अपनी ताकत को मजबूत किया। हम संघ के सभी नेताओं पदाधिकारीयों सदस्यों को आशीर्वाद देते हैं कि सभी ऐसा मार्ग तलाश करें कि विभाग के योग्य पढ़े लिखे क्वालीफाइड कर्मचारी राजपत्रित अधिकारी बन सेवा निवृत हों। डाक्टर नृपेंद्र सिंह व नरेंद्र विक्रम सिंह को आशीर्वाद।

आप सभी को नववर्ष की असीम शुभकामनाएँ।

पुजारी विश्व शांति, अंतर्राष्ट्रीय स्वतंत्र पत्रकार

पंडित अनिल शुक्ल

कानूनी सलाहकार, ''प्रथम अमूल्य निधि ऑफ द संघ''

आवास - विनय खंड एक गोमती नगर लखनऊ

खुद को मंजूर होना चाहता हूं

नमस्कार साथियों,

न मशहूर होना चाहता हूं, न मगरूर होना चाहता हूं।

बस इतनी सी चाहत है, खुद को मंजूर होना चाहता हूं।।

दोस्तों, पदाधिकारी के रूप में इस पत्रिका के जरिए शायद यह मेरा आप सभी के समक्ष आखिरी लेख हो। मैं अपने दो वर्षो के सफर को देखता हूं तो अनेक चुनौतियां आई, आप सभी के सहयोग व ईश्वर के आशिर्वाद से मुझे आशा से अधिक सफलता प्राप्त हुई। दोस्तों मार्च 2021 बाराबंकी अधिवेशन में जहां पैनल और बैनर की आंधियों के बीच आपने अपने स्नेह और आशिर्वाद से इस टिमटिमाते दिए को जलाए रखा और वरिष्ठ उपाध्यक्ष पद पर सबसे अधिक मत प्रदान कर मुझे प्रांतीय संघ का वरिष्ठ उपाध्यक्ष बनाया। पदाधिकारी के रूप में मैंने 14 मार्च 2021 शपथ ली जिसके तुरंत बाद **2015** बैच की चुनौती सामने आई, मैंने जब कार्यसमिति के अध्यक्ष के रूप में जिम्मेदारी स्वीकार करी तो मेरे कुछ मित्रों ने कहा कि संघ में तुम्हारा कैरियर यहीं समाप्त हो गया। मगर आप सभी ने मुझ पर जो विश्वास दिखाया उससे यह मेरे सफर की ऐतिहासिक शुरुआत हो गई, इलाहाबाद में होने के नाते माननीय उच्च न्यायालय में पैरवी की जिम्मेदारी भी मुझे सौंपी गई जिसमें अलग-अलग विषय में कम ज्यादा सफलता प्राप्त हुई । दोस्तों मुझे दूसरी बड़ी जिम्मेदारी शेट्टी कमीशन की रिट की प्रदान की गई इस संबंध में मैं आप सभी को अवगत कराना चाहता हूं, कुछ विषम परिस्थितियों के कारण विगत माह में रिट से अधिक डेट नहीं लग पाई, वर्तमान में न्यायमूर्ति श्री अश्वनी मिश्रा जी ने इस डेट को अपनी बेंच से रिलीज कर दिया है व महानिबंधक महोदय ने माननीय मुख्य न्यायमूर्ति महोदय को इसमें किसी जज को नामीनेट करने के लिए आख्या प्रेषित की है। माह जनवरी में फिर इसकी सुनवाई शुरू हो जाएगी मेरी पूरी कोशिश होगी कि प्रत्येक माह में कम से कम **2** डेट आवश्य लगे व रिट में सुनवाई सुनिश्चित हो सके । दोस्तों आज हम सभी कार्य की अधिकता के बोझ से ग्रसित हैं जिसका स्थाई समाधान केवल और केवल जस्टिस के. एल. शर्मा समिति की सिफारिशों को लागू करा कर किया जा सकता है। जस्टिस के. एल. शर्मा समिति की रिपोर्ट को लागू कराने की रिट माननीय उच्च न्यायालय

में दाखिल होने के लिए तैयार है, माह जनवरी में प्रांतीय महासचिव जी के हस्ताक्षर से माननीय उच्च न्यायालय में रिट दाखिल हो जानी चाहिए ।

दोस्तों अब मैं आप सभी को **27** नवंबर को होने वाले महासम्मेलन के लिए आप सभी के योगदान के लिए बहुत-बहुत आभार व्यक्त करता हूं, किसी ने क्या खूब कहा है कि

"कौन कहता है कि आसमान में छेद नहीं हो सकता एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारो"

जब इस महासम्मेलन की अवधारणा रखी गई तो हममें से बहुत से लोग इसकी सफलता के लिए आशंकित थे, इस संदर्भ में ग्रुपों पर भी काफी पोस्ट की गई, पदाधिकारी के साथ-साथ इस महासम्मेलन का आयोजक होने की मुझे दोहरी भूमिका निभानी थी। जैसे-जैसे महासम्मेलन परवान चढ़ता गया मेरी जिम्मेदारी और बढ़ती गई। मैं अपने इलाहाबाद के साथियों को धन्यवाद देना चाहता हूं जो इस महायज्ञ में आहुति देने के लिए मेरे कंधे से कंधा मिलाकर तैयार रहे। आर्थिक सहभागिता हो या आयोजन में योगदान सभी साथियों ने बढ़-चढ़कर अपना योगदान दिया एक बार पुनः मेरे इलाहाबाद के साथियों को बहुत-बहुत आभार ।

दोस्तों, मैंने शुरुआत में ही कहा था कि यह महासम्मेलन हमें क्या देगा यह तो भविष्य बताएगा मगर यह महासम्मेलन हमें हमारा आत्मविश्वास और आत्मसम्मान जरूर प्रदान करेगा। आप सभी के योगदान ने संघ को उस मुकाम तक पहुंचाया जहां माननीय उच्च न्यायालय को महासम्मेलन से पहले ही हमें वार्ता के लिए बुलाने के लिए विवश होना पड़ा। माननीय उच्च न्यायालय में **4** घंटे से अधिक चली वार्ता का मैं स्वयं साक्षी हूं, हमारी सभी मांगों को न केवल सुना गया बल्कि चरणबद्ध तरीके से इसका निवारण किस तरह से किया जाएगा इससे भी हमको अवगत कराया गया। सबसे प्रमुख मुद्दा मृतक आश्रितो की शैक्षिक योग्यता के आधार पर नियुक्ति के संबंध में माननीय उच्च न्यायालय द्वारा समिति का गठन किया जाना इसकी शुरुआत है, आशा है कि हमारी अन्य समस्याओं का समाधान भी हमें अगले माह जनवरी में दिखेगा । दोस्तो ये आप सभी का योगदान है कि अब तक जो माननीय उच्च न्यायालय हमारी बातों को संज्ञान नही ले रहा था वह हमें बुलाकर हमारे समस्याओं के समाधान की बात करने लगा। विगत समय में हम दो घटनाएं देख सकते हैं जब एकजुट होकर हमने अपनी शक्ति दिखाई और हमें ऐतिहासिक सफलता प्राप्त हुई। पहली **2015** बैच के संबंध में दूसरी आप सभी

के इस महासमेलन के लिए योगदान से प्राप्त शक्ति जिसने माननीय उच्च न्यायालय को हमसे वार्ता के लिए विवश किया।

दोस्तों माहासम्मेलन का स्थगित होना व्यक्तिगत रूप से मेरे लिए सबसे निराश करने वाला रहा क्योंकि हमने इसके आयोजन के लिए काफी धन व्यय किया था व अथक मेहनत की थी। आपके उत्साह के साथ-साथ हमारा उत्साह भी कई गुना बढ़ता जा रहा था । दोस्तों पदाधिकारी के रूप में जोश के साथ-साथ होश रखना हमारी जिम्मेदारी थी जिसके कारण महासम्मेलन से स्थगित करने का कठिन निर्णय लिया गया।

दोस्तों संघ के पदाधिकारी के रूप में आप सभी ने जो स्नेह, सहयोग और सम्मान मुझे प्रदान किया है इसके लिए मैं आजीवन आपका आभारी रहूंगा। मैं अपने कार्यकारणी के प्रत्येक साथी का उनके सहयोग व जो विश्वास मुझ पर दिखाया उसके लिए आभार व्यक्त करता हूं। मेरा हमेशा मानना रहा है कि प्रत्येक पद एक जिम्मेदारी होती है मैंने हमेशा अपनी पूरी सामर्थ से इस जिम्मेदारी को निभाने की कोशिश की फिर भी मुझसे जो भी त्रुटियां हो गई हो उसके लिए मैं आप सभी का क्षमा प्रार्थी हूं। एक बार पुनः आप सभी के स्नेह सहयोग और सम्मान के लिए कोटि कोटि आभार।

बढ़ते गए कदम साथ मिलता गया
न रुके न थमे वो कारवां मिलता गया
आपके विश्वास ने वो साहस दिया
जिससे अंधेरों से लड़ सकें
सूर्य के तेज को सह सके
अडिग रहे आंधियो में
तूफानों को सह सके।

धन्यवाद !

अभिषेक सिंह
वरिष्ठ प्रांतीय उपाध्यक्ष
दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ,
उत्तर प्रदेश

व्यक्ति का नजरिया ही उसके व्यक्तित्व का आईना होता है

समाज में जब हम अपने कदम रखते हैं तो सबसे ज्यादा आवश्यक होता है हमारा दृष्टिकोण। यदि हमारा दृष्टिकोण सही नहीं है तो हम दिशाभ्रम के शिकार हो जाते है और फिर हमारे सारे प्रयास और परिणाम विफल हो जाते हैं। हम समाज में हर जगह किस दृष्टिकोण का उपयोग करते है, समाज हमें उसी प्रकार से पहचानने लगता है। दृष्टिकोण भी दो प्रकार का होता है :-

- सकारात्मक (वे लोग जो जिंदादिली और उदारता की मिसाल बनते हैं।)
- नकारात्मक (वे लोग जो मुर्दादिली, तंगदिली, पूर्वाग्रह और चिड़चिडेपन के कारण अवसाद से भरे होते हैं।)

जो व्यक्ति तंगदिल, पूर्वाग्रह या हर बात पर चिड़चिड़ेपन का शिकार होता है, उसकी पहचान यही होती है कि उस अमुक व्यक्ति के लिए आप कुछ भी कर जाओ अंततः उसे किसी न किसी बात पर आपसे शिकायत रह ही जाती है। ऐसे व्यक्ति मुर्दादिली के शिकार इस हद तक होते हैं कि उन्हे स्वयं को छोड़कर कायनात की हर चीज़ से शिकायत रहती है। जब भारतीय क्रिकेटर कप्तान महेन्द्र सिंह धोनी भी विश्वकप जीत कर आए होगें तो बड़ी मुश्किलात से दुखी मन से भारी दबाव में आकर हजारों कमियां निकालने के पश्चात् उनके मुँह से तारीफ के दो शब्द ही निकल पाए होगें। आम जनमानस की भाषा में ऐसे महान लोगों को 'मनहूस' कहने का चलन है और अमूमन सभ्य समाज के लोग ऐसे व्यक्ति से दूरी बनाकर ही रखना चाहते हैं।

दूसरी ओर खुशमिजाज और जिंदादिल लोगो की खासियत होती है कि वह कठिन परिस्थितियों में भी प्रसन्न रहने की वजहें तलाश लेते हैं। वे कठिनाईयों में अपने व्यक्तित्व को और निखारते हैं, उनके माथे पर शिकन नही आती, परिस्थितियां विपरीत होने के बावजूद वो अपना और अपने साथ और लोगों का भी हौंसला बढ़ाते हैं। खुशमिजाज लोगों के जीवन में भी तमाम कष्ट और अभाव होते हैं परन्तु वे विपरीत परिस्थितियों में भी अपनी सहजता और उदारता को कभी कमजोर नही पड़ने देते।

आलोचना भी दो प्रकार की होती है, पहली सार्थक और दूसरी निरर्थक। निरर्थक आलोचना का तात्पर्य है कि समस्या का बिना कोई समाधान सुझाए केवल आलोचना करना मात्र लक्ष्य होता है। दरअसल ऐसे व्यक्ति पूर्वाग्रह का शिकार होते हैं और संकल्पित होते हैं कि कुछ भी हो जाए हमें हर हालात में केवल आलोचना करनी है। इस संबंध में एक प्रसिद्ध कहावत है जो संभवतः ऐसे ही व्यक्तियों को आईना दिखाने के लिए गढ़ी गई होगी।

"एक बार एक चित्रकार ने एक चित्र बनाकर चौराहे पर रख दिया और साथ में एक टिप्पणी-पुस्तिका पर लिखा कि जिन्हे लगता है कि इस चित्र में कोई कमी है, वे टिप्पणी पुस्तिका में कमी को उजागर करते हुए हस्ताक्षर कर दें। कुछ देर में ही पूरी टिप्पणी पुस्तिका भर गई। चित्रकार रूआँसा हो गया क्योंकि इस चित्र को बनाने में उसने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया था। फिलहाल, अगले दिन उसने वह चित्र फिर से उसी स्थान पर रखा और इस बार साथ में रंग और ब्रश भी रख दिये। इस बार उसने लिखा कि कृपया चित्र की गलतियों को सुधार दें जिन्हे कल आपने पहचाना था। हैरत की बात थी की पूरा दिन गुज़र गया पर एक भी व्यक्ति ब्रश उठाने की हिम्मत नहीं दिखाई।"

मेरे कहने का तात्पर्य बस इतना था कि जैसी आलोचना इस कथा में चित्र को देखने वाले कर रहे थे, उसे ही निरर्थक अथवा बेवजह की आलोचना कहा जाता है। ऐसे लोगों में इतना नैतिक व रचनात्मक साहस नहीं होता कि वह किसी विषय को लेकर नए विकल्प खड़े कर सकें या किसी समस्या का प्रभावी समाधान सुझा सकें। ऐसे ही लोगों के लिए किसी शायर ने बहुत खूब लिखा है :-

"जिसकी नज़रों में था हर इंसाँ का चेहरा दागदार, आईने के सामने आकर वो शरमाया बहुत।"

हर व्यक्ति को चाहिए जब भी आप किसी के व्यक्तित्व का मूल्यांकन करें तो स्वस्थ नजरिये से करें, उसमें सकारात्मकता बनाए रखें। स्वस्थ्य नजरिये वाले लोगों की खास बात होती है कि वे दूसरों की कमियों से ज़्यादा ध्यान उनकी खूबियो पर देते हैं। वे किसी की आलोचना करने से पहले खुद को उस व्यक्ति के स्थान पर रखकर अनुमान करते हैं कि अगर वे स्वयं उसी परिस्थिति में होते तो क्या वे खुद वैसा व्यवहार कर पाते, जिसकी उम्मीद वे उस व्यक्ति से कर रहे हैं ? स्वस्थ्य मूल्यांकन करने वाले कमियाँ नहीं बल्कि समाधान भी सुझाते हैं। उनकी भाषा प्रोत्साहन की होती है हतोत्साहन की नहीं।

एक बात और कहना चाहूंगा कि किसी व्यक्ति का मूल्यांकन करते समय एक बात का ध्यान और रखना चाहिए कि जिन कसौटियों पर और जितनी निर्ममता से हम दूसरों की आलोचना करते हैं, वही कसैटियाँ हम खुद पर भी लागू करें। इसी विशेषता को वस्तुनिष्ठता कहते हैं। यह भी मानकर चलना चाहिए कि छोटी-मोटी कमियों और गलतियों से दुनिया का कोई भी व्यक्ति कभी मुक्त नहीं हो सकता। किसी महान विचारक ने बड़े पते की बात कही है, *"महानता चाहे जितनी भी बड़ी हो, व निर्दोष नहीं होती; उसमें छोटे-मोटे छिद्र रह ही जाते हैं।"* अस्तु हमें किसी कि छोटी-मोटी कमियों पर असहिष्णु नहीं होना चाहिए साथ में यह याद रखना चाहिए कि कमियाँ हममें भी कम नहीं है। कबीर दास जी की पंक्तियाँ हमें सलाह देती हैं :-

"बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलया कोय।
जे दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय।"

समस्याओं को गिनाने से बेहतर है कि समस्याओं को सुलझाने हेतु मार्ग ढूंढने में अपनी ऊर्जा व्यय करें। अपनी समस्याओं पर किसी और को दोषी मानने से बेहतर है कि जितना समय और ऊर्जा हम किसी की आलोचना में लगाते हैं उतनी ही ऊर्जा हम समाधान ढूंढने में लगाएं। यदि कोई समस्या सामूहिक है तो साथ मिलकर समाधान ढूंढने में ऊर्जा लगाएं न कि आपस में एक दूसरे की कमी निकालने में। कुल मिलाकर अगर हम चाहते हैं कि हमें समाज में एक शानदार व्यक्तित्व के रूप में जाना जाए तो हमें अपना नजरिया स्वस्थ्य बनाना होगा। अपनी जिद और स्वयं को श्रेष्ठ समझने जैसी मानसिक प्रवृति से ऊपर उठ कर ऐसा नज़रिया बनाना मुश्किल तो है पर असंभव नहीं। हम सभी को दूसरों की स्वयं के स्वार्थ के अधीन बिना वजह की आलोचना करने से बचना चाहिए। आज और अभी से अपनी नकारात्मकता को पहचान कर स्वयं को टोकना शुरू करना चाहिए।

(श्रीभागवत शुक्ल)
वरिष्ठ सहायक
जिला एवं सत्र न्यायालय, बस्ती
प्रतिनियुक्त: मा० उच्च न्यायालय, इलाहाबाद
लखनऊ पीठिका, लखनऊ

भूल गए क्या

एक आह्वाहन पर, कांप उठी ये धरती थी,
विनय अनुरोध निवेदन को जब तुमने सिरे नकार दिया,
हमने भी फिर मुट्ठी बनकर एक स्वर में तुम्हे ललकार दिया।
फीकी पड़ी तुम्हारी झूठी गरिमा का जब हमने प्रसार किया,
तुमने बहुत चालाकी से झुक का संघ का सम्मान किया।
कर झूठे वादे, दे मिथ्या दिलासे तुमने नम्रता का ढोंग रचा,

फिर

जो तीर बाण से निकल चुका था उसको संघ ने थाम लिया,
दुख वेदना पीड़ा के इस प्रबल वेग को संघ ने पुनः विमुश किया,
संविधान के गरिमा के खातिर जन आंदोलन को अवरुद्ध दिया।
भूल न करना, न समझना इसे दुर्बलता, न ही कोई परवशता,
आरंभ अविशेष बनाया तुमने, अंत न बदल पाओगे।
इतिहास जो संघ रचेगा फिर, उसको न भूल पाओगे।
कण कण अष्ठ दिशाओं से व्यापक विशिष्ट जन संचार होगा,
फिर प्रयागराज की पावन पवित धरती पर,
पुनः वृहद जन आंदोलन का आगाज होगा।

(अभिषेक श्रीवास्तव)
वरिष्ठ सहायक
जिला एवं सत्र न्यायालय, गोरखपुर

कमेटी की जय हो

न्याय विभाग की समूह- ग व घ की नौकरी में सभी कर्मचारी बन्धुओं को अपनी सेवा के दौरान कई बार कमेटी के दर्शन अवश्य होते हैं। किसी बड़े से बड़े विषय से लेकर छोटे से छोटे विषय को भी कमेटी में डाल दिया जाता है। यद्यपि कमेटी का निर्णय या सुझाव लोकमत से लिया गया जाएगा, इस सुविचार के साथ शुरू की गई इस विचारधारा में अत्यधिक विलम्ब नामक दीमक लग चुका है दूसरे शब्दों में कहें तो जो कमेटी कर्मचारियों के कष्ट निवारण के लिये बनाई जाती थी वह अब स्वयं कर्मचारी हितों के लिये कष्टप्रद बन चुकी है। पदोन्नति, स्थायीकरण, ए०सी०पी० जैसे विषयों से लेकर अर्जित अवकाश व चिकित्सीय अवकाश के दौरान रोके गए वेतन का भुगतान के लिए भी कमेटी के निर्णय या सुझाव का इन्तजार किया जाने लगा है। हालांकि अर्जित अवकाश व चिकित्सीय अवकाश पर होने के दौरान का वेतन रोक लिए जाना भी एक कुप्रथा ही है, अर्जित अवकाश लेने पर वेतन रोकने का कोई वैधानिक आदेश अथवा नियम न होने के बावजूद कर्मचारीगण के अर्जित अवकाश जाने पर वेतन रोक महीनों तक रोकना, खुला आर्थिक शोषण करने का ये सबसे मजबूत हथकण्डा है, जब कर्मचारी को धन की सर्वाधिक आवश्यकता होती है, तब उसके अपने विभाग द्वारा उसका वित्तीय अधिकार अग्रिम आदेश तक उससे छीन लिया जाता है और कर्मचारी को अपनी आवश्यकता पूर्ति हेतु दूसरे साथियों की दया के ऊपर आश्रित होना पड़ता है। इस विषय पर जितनी ही चर्चा व निन्दा की जाए उतनी ही कम है, जबकि मा० उच्च न्यायालय द्वारा कमेटियों द्वारा मामलों के निपटारे हेतु समयबद्ध निर्देश भी हैं, परन्तु वही ढ़ाक के तीन पात। फिलहाल विषय है कि कमेटी अपना सुझाव सक्षम अधिकारी को कितने त्वरित रूप से उपलब्ध कराती है, इससे हर समूह- ग व घ का कर्मचारी अच्छी तरह वाकिफ है। कमेटी के सदस्य भी वहीं प्रांगण में विद्यमान होते हैं, ऐसा भी नहीं कि किसी अन्य जिले से उन्हें बुलवाना पड़ेगा, परन्तु फिर उसकी प्रक्रिया सालों साल लम्बित रहती है । कमेटी अपने आला अफसर के इशारों पर ही जगती है, बाकी समय सोई रहती है। कर्मचारी हित हेतु कमेटी नामक सुविचार का दुरूपयोग कर्मचारियों को उनके हितों व अधिकारों से दूर रखने के लिए किया जाना आज आम बात हो गई है।

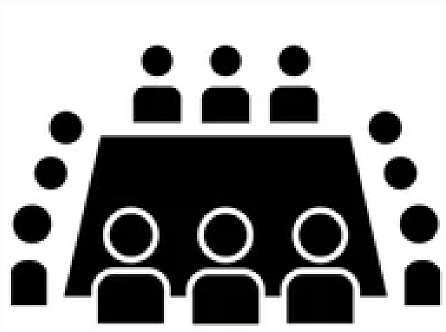

जिन विभागों में ड्रेस-कोड निर्धारित है वहां पर परिधान के लिए भत्ते दिये जाते हैं, उदाहरणस्वरूप- परिवहन विभाग, पुलिस विभाग। हमारे यहाँ भी ड्रेस-कोड सभी के लिए अनिवार्य है,

किन्हीं अपरिहार्य कारणों से न पहन के आ पाओ तो माननीय वरिष्ठों के सामने लज्जित होना पड़ता है, यहाँ तक कि कुछ कर्मचारी भाईयों को सिर्फ टाई-कोट न पहनने पर दण्डित किया गया। परन्तु, परिधान भत्ते के रूप में सभी को कुछ नहीं दिया जाता, वहाँ अनिवार्यता शीतनिद्रा में चली जाती है। सीधी सी बात होनी चाहिए, या तो ड्रेस-कोड न हो अगर हो तो उसके लिए नियमित रूप से पर्याप्त भत्ता मिले ताकि वर्ष भर में कम-से-कम दो जोड़ी सिला सके, जिससे माननीय महोदयों के कोप का भागी न बनना पड़े। प्रान्तीय संघ द्वारा कई प्रतिवेदन इस विषय पर मा० उच्च न्यायालय को प्रेषित किया है (उदाहरणस्वरूप हाल में ही दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ उ०प्र० द्वारा प्रेषित पत्रांक सं०-57/2022 दिनांकित 24-11-2022) वह भी किसी कमेटी में विचाराधीन होगा या विचार हेतु भेजा जाएगा, सुझाव या अनुशंसा आते आते दशकों बीत जाएँगे और निर्दोष कर्मचारियों का अहित होता रहेगा।

व्यवस्था की आलोचना कदापि मेरा या किसी अन्य कर्मचारी भाई का विचार नहीं होगा, अपितु उस व्यवस्था से कर्मचारी हितों का हनन हो रहा हो। एक अदना सा कर्मचारी क्या चाहता है कि जिस विभाग में वह गर्व से जी जान लगा कर काम कर रहा है, वह विभाग भी उसकी विषम परिस्थिति में अपना हाथ न खींचे, परन्तु यहाँ तो उसका हक उससे छीन लिया जाता है और उसे छोड़ दिया जाता है भगवान भरोसे। माना कि संगठन में बहुत शक्ति है, परन्तु फिलहाल सारी शक्ति कमेटी में निहित हो गई है और जब किसी जादू की छड़ी से उस कमेटी को जगाया जाएगा, तब जाकर वह कमेटी कर्मचारी हितों की बात करेगी, अन्यथा सालों साल सोयी पड़ी रहेगी। अगर संघ वास्तविक रूप से कर्मचारी हित चाहता है तो कमेटी को नींद से जगाने वाली जादू की छड़ी को उसको अपने हाथ में लेना पड़ेगा।

हिन्द की जय हो, संघ की जय हो

कमेटी की जय हो

(उमेश चन्द्र जायसवाल)
कनिष्ठ सहायक
जिला एवं सत्र न्यायालय, बस्ती
संयुक्त सचिव, उ०प्र० दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ, शाखा बस्ती
सह-सम्पादक- उद्घोष, त्रैमासिक ई-पत्रिका

मेहनत की रोटी

वो रोटी चार ही तो थे
जिसे मैं छोड़ आया था
बड़ी थी काम की जल्दी
जिसे खा भी न पाया था

जैसे थे सूरत-ए-हालात
फिरंगी हो गया था मैं
जैसे मैं भूखा गया था
वैसे ही भूखा आया था

बड़ी ही भूख लगी थी
माता ने समझाया था
तू जिसके पीछे भागा था
वो तेरे पीछे आया था

वो ली थी, वक्त ने करवट
शरीरे सो गई थक के
जिसे मैं छोड़ आया था
उसे आ के न पाया था

नसीब मैं इस कदर जीता
नसीब ही हो गई नाराज
जहा कमाने गया था
सिर्फ कमा के मै आया

जो रोटी छोड़ दिया था
उसे फिर पा न पाया था
तूने रोटी न खाई थी
रोटी ने तुझको खाया था

(मारूति)
वरिष्ठ सहायक
जिला एवं सत्र न्यायालय, वाराणसी

कहाँ पर बोल जाते हैं

कहाँ पर बोलना है
और कहाँ पर बोल जाते हैं।
जहाँ खामोश रहना है
वहाँ मुँह खोल जाते हैं।।

कटा जब शीश सैनिक का
तो हम खामोश रहते हैं।
कटा एक सीन पिक्चर का
तो सारे बोल जाते हैं।।

नयी नस्लों के ये बच्चे
जमाने भर की सुनते हैं।
मगर माँ बाप कुछ बोले
तो बच्चे बोल जाते हैं।।

बहुत ऊँची दुकानों में
कटाते जेब सब अपनी।
मगर मजदूर माँगेगा
तो सिक्के बोल जाते हैं।।

अगर मखमल करे गलती
तो कोई कुछ नहीं कहता।
फटी चादर की गलती हो
तो सारे बोल जाते हैं।।

हवाओं की तबाही को
सभी चुपचाप सहते हैं।
चरागों से हुई गलती
तो सारे बोल जाते हैं।।

बनाते फिरते हैं रिश्ते
जमाने भर से अक्सर हम
मगर घर में जरूरत हो
तो रिश्ते भूल जाते हैं।।

कहाँ पर बोलना है
और कहाँ पर बोल जाते हैं
जहाँ खामोश रहना है
वहाँ मुँह खोल जाते हैं।।

(ऋषि यादव)
अध्यक्ष
दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ उ०प्र०
शाखा-फर्रुखाबाद
सह-सम्पादकः उद्घोष त्रैमासिक ई-पत्रिका

कचेहरी: एक उम्मीद

ये कचेहरी है भैया, कभी यहां आकर तो देखो,
जिंदगी के कुछ पल बिताकर तो देखो,
फाइलों के बोझ तले बाबू जी दबे हैं,
निर्णयों की साख लिए जज साहब पड़े हैं,
गर गुरुर हो तुम्हे अपनी दौलत पर तो,
कभी वकील साहब से दिल लगाकर तो देखो,
ये कचेहरी है भैया कभी यहां आकर तो देखो।

हमने एक से एक मुकदमेबाजो को देखा,
जिन्हें अपनी कई पुश्तों को आजमाते देखा,
देख लेंगे तुझे कचेहरी में ऐसे तीरंदाजों को देखा,
गर भूख प्यास नहीं लगती तुम्हे
जिंदगी में तो इक बार,
कचेहरी से रिश्ता निभाकर तो देखो,
ये कचेहरी है भैया कभी यहां आकर तो देखो।

पेशकार साहब लोगों की बातें निराली है साहब,
शाम तक उनको कलम चलानी है साहब,
गर तारीख लेनी है तो
उनसे नजरें मिलानी है साहब,
कभी पेशकार साहब से नजरे चुरा कर तो देखो,
ये कचेहरी है भैया कभी यहां आकर तो देखो।

चपरासियों की हालत न पूछो मेरे भाई,
जवानी में जिंदगी उन्होंने जलाई,
हर पल है देते ये कचेहरी की दुहाई,
कभी इनकी भी दुनियां में जाकर तो देखो,
ये कचेहरी है भैया कभी यहां आकर तो देखो।

झूठी मोहब्बत में ये दुनिया पड़ी है,
असली मोहब्बत निभाती कचेहरी है,
जन्मों जन्मों का रिश्ता निभाती कचेहरी है,
बड़ी मुद्दत से दिल जब लगाती कचेहरी है,
अमीरी गरीबी की दूरी मिटाती कचेहरी है,
दीन दुखियों के आंसुओं का कर्ज निभाती कचेहरी है
अपराध को जड़ से मिटाती कचेहरी है,
कोई कुछ भी कहे पर बहुत प्यारी कचेहरी है,
कभी मुश्किलों के समय में आकर तो देखो,
न्यायालय में अर्जी लगा कर तो देखो,
ये कचेहरी है भैया कभी यहां आकर तो देखो।

(अनुराग विश्वकर्मा)
जिला एवं सत्र न्यायालय
अम्बेडकरनगर

अब भी तेरे वादे और कसम याद है मुझको।
तूने जो थे ढाए सब सितम याद है मुझको।।

इक तेरे जिक्र भर से तड़प उठता हूँ अब भी।
तेरी उल्फत में जो पाए गम याद है मुझको।।

बड़ा ही दुशवार था सफर मुहब्बत का मेरी।
उस रस्ते का हर एक कदम याद है मुझको।।

इतनी मुद्दत में भी तो नहीं भूला कुछ भी।
वो आँखें वो बांहें वो सनम याद है मुझको।।

अब भी तेरी खुशबू में मदहोश है ये 'केवल'।
अब भी तेरी जुल्फों के खम याद है मुझको।।

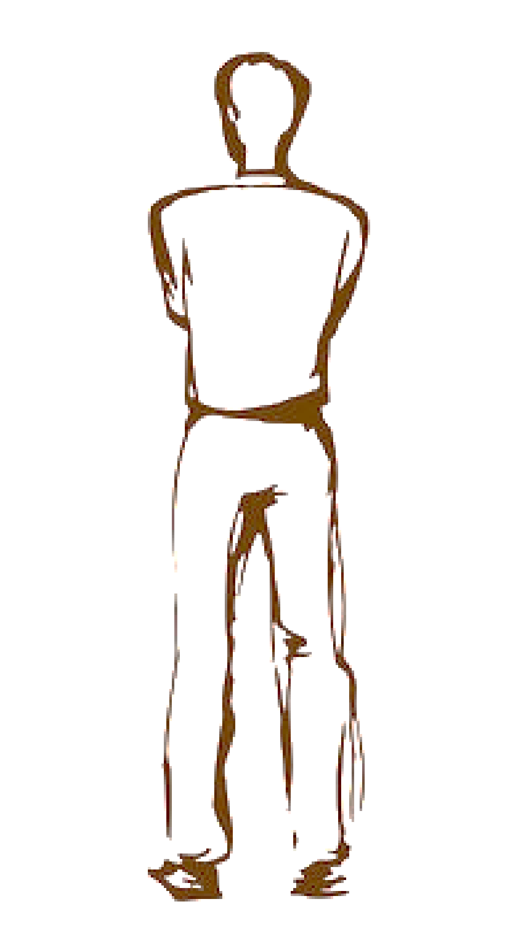

(अमित मिश्र)
System Administrator
जिला एवं सत्र न्यायालय, लखनऊ

आज के युग में जहां मोबाइल से बहुत से फायदे हैं, वही आज की पीढ़ी ने मोबाइल पर अत्यधिक निर्भर होकर बहुत सारी बीमारियों को दावत दे दी है। विशेष करके छोटे बच्चे अपना ज्यादा समय इस मोबाइल पर ही व्यतीत कर रहे हैं जिससे उनकी आंखें समय से पहले ही खराब हो जा रही है और दिमाग पर भी दुष्प्रभाव पड़ रहा तथा वह मानसिक रूप से भी वह कमजोर हो जा रहे है और उनका कोई सामाजिक दायरा नहीं बन पा रहा और ना ही समाजिकता व वास्तविक जीवन में उसकी उपयोगिता की समझ बन पा रही है। मोबाइल की धुन में युवा पीढ़ि इतनी डूबती जा रही है कि उन्हे परिवार, रिश्तेदारों के बारे में भी नहीं जान पा रहे हैं, क्योंकि अब व्यक्ति का जीवन व्हाट्सएप, फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्वीटर, शेयर चैट तक ही सीमित होकर रह गया है। इस माडर्न युग में मोबाइल की सकारात्मक उपयोगिता को नकारा नहीं जा सकता, मोबाइल ने शिक्षा के क्षेत्र से लेकर तकनीकी सुविधाओं को और सुलभ बनाया है, लेकिन हमारी आने वाली पीढ़ियां हमें इस बात के लिए कभी माफ नहीं कर पाएंगी की हमारे पूर्वजों ने बिना मोबाइल के ही भारतीय संस्कृति को इस मुकाम तक पहुंचाया जिस पर आज अमेरिका, जर्मनी, इंग्लैंड जैसे देश रिसर्च कर रहे हैं। मोबाइल के दुष्प्रभाव से बचने के लिए हमें समय समय से ही मोबाइल का उपयोग करना चाहिए पल पल में व्हाट्सएप फेसबुक नहीं देखना चाहिए इसके लिए हमें एक समय निर्धारित करना चाहिए कि सुबह एक निश्चित समय में सारे जानने वालों को व्हाट्सएप या फेसबुक पर मैसेज करके इंटरनेट बंद कर देना, सोते समय मोबाइल को अपने शरीर से काफी दूर रखना चाहिए क्योंकि मोबाइल से निकलने वाली रेडिएशन युवाओं पर नकारात्मक प्रभाव डालती है। मोबाइल का उपयोग केवल जरूरत पड़ने पर ही करना यदि सम्भव हो तो तो **5-6** घंटे के अंतराल में उसे देखना चाहिए, इससे हमारी इच्छाशक्ति भी बढ़ेगी और हम मोबाइल के दुष्प्रभाव से बच सकेंगे और हमारी एकाग्रता भी बढ़ेगी।

(सर्वेश श्रीवास्तव)
वरिष्ठ सहायक
जिला एवं सत्र न्यायालय, गाज़ीपुर

भारत के अधीनस्थ न्यायालयों में न्यायिक कर्मचारियों की दुर्दशा

संसार में न्यायालय एवम् न्यायाधीशों को भगवान का दर्जा दिया जाता है यह कहा जाता है भगवान के बाद न्यायाधीश ही हमारे भगवान है जो हमे न्याय देते है। परन्तु इस न्याय से हम अधीनस्थ न्यायालयों में कार्यरत सभी वर्ग के कर्मचारी उनके न्याय से हमेशा वंचित रहते है विशेष रूप से अधिनस्थ न्यायालयों में कार्यरत चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी हमेशा मानसिक और शारीरिक शोषण का शिकार रहता है और हमेशा प्रताड़ित किया जाता है इसका जीता जागता उदाहरण राजस्थान राज्य के अधीनस्थ न्यायालय में पूरे देश को देखने को मिला की कैसे वहां एक चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी **सुभाष मेहरा** जिसको न्यायाधीश महोदय जी की कोठी अर्थात राजकीय आवास पर घरेलू कार्य कराए जाने के उद्देश्य से रखा गया इसके कुछ महीनों बाद उसकी हत्या हो जाती है उसको आत्महत्या का रूप दे दिया जाता है अब वह हत्या है या आत्महत्या जांच के बाद ही जानकारी हो पाएगी उस मामले में प्रथम सूचना रिपोर्ट लिखाने के लिए संपूर्ण राजस्थान से समस्त वर्गों के न्यायिक कर्मचारी भाइयों द्वारा **27** दिन तक सामूहिक अवकाश लेकर आंदोलनरत रहा जाता है तब जाकर प्रथम सूचना रिपोर्ट लिखी जाती है क्या यह हम कर्मचारियों के साथ अन्याय और भेदभाव नहीं है। हमे न्याय देने से वंचित क्यों किया जाता है ?

इसी तरह का यही हाल अन्य राज्यों में भी न्यायिक कर्मचारी भाइयों एवम् बहनों का है उत्तर प्रदेश के अधीनस्थ न्यायालयों में तो सबसे अधिक एवं विशालकाय समस्या है घरेलू कार्य करवाया जाना जो की शासनादेश संख्या-7 ई० एम०/91- का- **4- 1997** दिनांक **17** दिसंबर **1997** के अनुसार पूर्णतया नियम विरूद्ध है परन्तु इसके बावजूद भी घरेलू कार्य करवाए जाते है जिसकी शिकायते एवं सूचनाएं प्रांतीय संघ के माध्यम से माननीय उच्च न्यायालय इलाहाबाद भेजी जाती रहती हैं घरेलू कार्य न करने पर तमाम प्रकार की गैर न्यायिक जांच संस्थित कर अपने पद

व शक्तियों का दुरूपयोग करके आफिशियल न मानते हुए व्यक्तिगत मानते हुए दंडादेश पारित कर सेवा संबंधित सरकारी कर्मचारी आचरण नियमावली का हवाला देकर आदेश पारित किए जाते है, इसके साथ ही गोपनीय प्रविष्टि भी खराब की जाती हैं।

जिस कारण उत्तर प्रदेश एवं भारत का तथा अन्य सभी राज्यों के अधिनस्थ न्यायालयों में कार्यरत न्यायिक कर्मचारी हमेशा मानसिक प्रताड़ित रहता है एवं उनकी मनोदशा पूर्ण रूप से खराब रहती है।

अधीनस्थ न्यायालयों में चतुर्थ श्रेणी से तृतीय श्रेणी में प्रतिवर्ष नियमानुसार पदोन्नति न करना। उत्तर प्रदेश के अधीनस्थ न्यायालयों में यह भी एक प्रमुख समस्या है जो प्रतिवर्ष उत्तर प्रदेश राज्य सरकार जिला न्यायालय नियमावली दिनांकित **21** जून **2017** के में उल्लिखित अनुसूचियों के नियमों के अनुसार चतुर्थ श्रेणी से तृतीय श्रेणी में प्रतिवर्ष पदोन्नति समयानुसार नहीं की जाती है जिस कारण चतुर्थ श्रेणी के पद पर कार्य करते करते **20, 25, 30** वर्षो तक सेवा करते हो गया है जिसकी वजह से चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी भाइयों एवम् बहनों की मनोदशा की बड़ी दुर्दशा है। जबकि पदोन्नति समय समय पर नियमानुसर किए जाते रहना चाहिए जिससे कर्मचारियों मे अलग उत्साह रहता है ।

(विनय कुमार शुक्ल)
प्रांतीय उपमहासचिव
चतुर्थ श्रेणी न्यायिक कर्मचारी संघ
उत्तर प्रदेश

हम सब एक हैं

आज तक संगठन ने अपने कर्तव्यों का पालन कर्मचारियों के हितों के लिए निःस्वार्थ भाव से किया! जरा सोचिए! हमने संघ को क्या दिया? आज हमारे पास बस एक मौका है कि संघ का साथ बिना किसी प्रश्न उठाते हुए दें क्योंकि संगठन को हमारा साथ ही पर्याप्त है मंजिल को पाने के लिए!!! क्या हम आज तक हर कोशिशों में सफल हुए ?? शायद नहीं, किन्तु कोशिश करना तो नहीं छोड़े !! आज संघ एक बडे उद्देश्य के साथ आगे बढ़ रहा है, सफल होना या ना होना तो समय तथा ईश्वर पर निर्भर है, किन्तु कोशिश करना हम सभी कर्मचारीगण की जिम्मेदारी है, यह उद्देश्य केवल संघ का नहीं अपितु हम सबका है, तो हम पूरे निः स्वार्थ भाव से संगठन का साथ दें। विरोध के स्वर तो हर युग में उठते रहे हैं, हर युग में कुछ लोग गुट बनाकर अपने निजी स्वार्थ अथवा पदलालुपता में आपको गुमराह करने की पूरी कोशिश करते रहेगें, क्योंकि ये युगो युगों से होता चला आया है । यदि कोई सार्थक आलोचना तर्क के साथ और सकारात्मक सुझाव के लिये देता है तो संघ उसे स्वीकार भी करता है। परन्तु अन्धविरोध, सदैव हमारी एकता को कमजोर ही करता है इसलिए केवल अपने स्वार्थ से ऊपर उठ कर प्रदेश के प्रत्येक कर्मचारी के कल्याण के लिए आइए हर नकारात्मक आवाज को अनसुना करते हुए सभी कर्मचारीगण संकल्प लें कि बिना उद्देश्य पूरा हुए हम सभी एकजुट रहेंगे और संगठन की छाया में संगठित होकर लक्ष्य की निरन्तर ओर कदम बढ़ायेंगे।

हे सहकर्मियों उठ जाओ, जरा स्वाभिमान जगाओ ।
अधिकार हमें अपना है पाना, तुम मेरा साथ निभाओ।
बूंदो सा रहे बिखरे, तो लक्ष्य कैसे हासिल होगा,
संगठित हो बनो सागर, शक्ति अपनी दिखलाओ।
अधिकार हमें अपना है पाना, तुम मेरा साथ निभाओ।
अहम्, ईर्ष्या, भेदभाव छोड़ सब मिलकर कदम बढ़ाओ।
हे सहकर्मियों उठ जाओ, जरा स्वाभिमान जगाओ।
अधिकार हमें अपना है पाना, तुम मेरा साथ निभाओ।
आऐंगी बाधाएं कभी, कभी निराशा भी घेरेगीं।
धीरज और दृढ़ता से अपनी तुम हर विघ्न का शीष झुकाओ।
हे सहकर्मियों उठ जाओ, जरा स्वाभिमान जगाओ ।
अधिकार हमें अपना है पाना, तुम मेरा साथ निभाओ।

(पंकज त्रिपाठी)
वरिष्ठ सहायक
जिला एवं सत्र न्यायालय, महोबा

अब अन्याय से वो लड़ने लगी

बेटी मेरी जबसे पढ़ने लगी
आजादी की ओर बढ़ने लगी
सहा था उसने शोषण बहुत
अब अन्याय से वो लड़ने लगी

हाथो में नही उनके अब चूड़ियां
है दीवारों पर उनके अब डिग्रियां
आंखों में उनके आया नया तेज
जबसे फेंकी काजल की डिबिया

उम्मीद मेरी चमकने लगी
सोच लोगो की बदलने लगी
बेटी मेरी जबसे पढ़ने लगी
आजादी की ओर बढ़ने लगी

नही बाबुल पर उनका अब बोझ
कमाने लगी मेहनत से अब रोज
माँ की चिंता भी अब कम हो गयी
घर मे बेटी को मिलने लगी जब मौज

बेटियां बेटों से आगे निकलने लगी
छोटे कदमो से ऊंची उड़ान चढ़ने लगी
कहता मुनेंद्र पढ़ाओ बेटियों को
बेटियां नया इतिहास गढ़ने लगी
बेटी मेरी जबसे पढ़ने लगी

आजादी की ओर बढ़ने लगे

मुनेन्द्र सिंह
समीक्षा अधिकारी
मा० उच्च न्यायालय, इलाहाबाद

क्योंकि लड़के और लड़की में कोई फर्क नहीं है।

लड़कियों के पैदा होने व
बाप के लिए चिंता का बीज
बोनेकी वजह
समाज द्वारा खाद पानी
दहेज के रुप में जड़ों में डाला जाना है
क्योंकि जड़ें खाती हैं।
पूरा पेड़ लहलहाता है।
बाहर से भले ही पिता मुस्कुराता है
पर अंदर ही अंदर टूटता चला जाता है।
शिकायत है तो सिर्फ पढ़े-लिखे लोगों से
क्योंकि यही समाज, दहेज न मिलने से अक्सर
रूठ जाता है।
जिस दिन डॉक्टर्स, इंजिनियर्स, अधिकारी, कर्मचारी
दहेज मुक्त शादी करेंगे
उसी दिन से
दहेज की रकम
उनकी शिक्षा पर आने वाले खर्च से
सीधे नहीं जोड़े जाएंगे।
सामने होगा -एक दहेज मुक्त समाज।
तब न डिबरी से जलने का डर,
ना स्टोप से फटने का डर,
ना गैस लीक होने की गुंजाइश और न ही अनायास
फंदे पर लटकते शव,
यही नहीं ये व्यक्ति
अपनी माँ, बहनों, जेठानी से
अपनी पत्नी के दांव पर लगी इज्जत को बचाएंगे।
माचिस की तिल्ली, मिट्टी का तेल, पेट्रोल,
बहुए नहीं जला पाएंगे।
पढ़ी-लिखी लड़कियों ने
दहेज लोभियो को झिंझोड़ा है।
उन्हें कहीं का भी नहीं छोड़ा है।
दहाड़ मार कर कहती है
रमुआ की बेटी सत्या,
मत करो अत्याचार,
रोक दो दहेज के कारण होने वाली भ्रूण हत्या।
आखिर मिग विमान उड़ाती है,
सीमा पर लड़ती है,
अंतरिक्ष में जाती है,
एवरेस्ट पर फतह पाती है,
कठिन से कठिन काम सहज ही निपटाती है।
काश!
लड़कियों को समाज ने और अधिकार दिया होता?
पिता के शव को कंधे पर रख,
भारी मन से ही नियत के ऊपर छाती पीटती,
मुखाग्नि देती ये बेटियाँ..
सिर्फ! बाप को ही नहीं तारती बल्कि
पूरे समाज को तार जाती।
लड़कियों को मुखाग्नि देने में
सिर्फ सोचने का फर्क है।
सच मानिए स्वर्ग यही है
और नर्क भी यही है
इनके मुखाग्नि देने से कहीं भी
कोई बेड़ा गर्क नहीं है।
क्योंकि लड़के और लड़की में कोई फर्क नहीं है।

डॉ0 कुमार विनोद
सेन्ट्रल नाज़िर
जनपद न्यायालय, बलिया

"हम है न्यायिक कर्मचारी"

हम है न्यायिक कर्मचारी
हम बढ़तें है। हम सीखते है।
नित नई भूमिकायें निभातें रहतें,
चेहरे पर मुस्कान के साथ,
करते नये लक्ष्यों की तैयारी
हम है न्यायिक कर्मचारी
हम है न्यायिक कर्मचारी

टेढ़ी-मेढ़ी, ऊँची-नीची है,
न्यायिक कर्मी की डगर
उतार-चढाव से भरा हुआ है,
न्यायिक सेवा का सफर
पर इसी से सीख कर,
करनी है आगे की तैयारी।
हम है न्यायिक कर्मचारी

हम है न्यायिक कर्मचारी
न्याय की रखवाली करते,
निभाते अपनी वफादारी,
चाहें कैसी भी चुनौती हो,
कड़ी मेहनत और प्रयास से
हमने अपना संघर्ष रखा है जारी,

हम है न्यायिक कर्मचारी
हम है न्यायिक कर्मचारी
हर दिन अदालतों में
समर्पण और प्रतिबद्धता से,
जुटते है हम काम पर
क्योकि, न्याय व्यवस्था चले सुचारू रूप से,
इसकी है हम पर जिम्मेदारी।
हम है न्यायिक कर्मचारी

हम है न्यायिक कर्मचारी
हार्दिक धन्यवाद के साथ,
आने वाला नया साल,
लाये खुशियां ढ़ेर सारी,
हो सपने सच आप सबके,
यही शुभकामना हमारी,
हो खुशहाल कर्मचारी
हो खुशहाल कर्मचारी

नीरज मणि त्रिपाठी
वरिष्ठ सहायक
जिला एवं सत्र न्यायालय,
बस्ती

वो तमाशबीन है बस शोर मचाने वाले हैं

जवानी चली गई इक इम्तहान में,
अब तेरे इन झूठे आंसू बहाने से दिलाशा,
कहां से होगा।
तुम लाख कोशिश करो हमे विश्वास में लाने का,
पर जिन्दगी भर जो धोखा खाया हो तो,
उसे भरोसा कहां से होगा।

इन लाठियों के बोझ तले
आज किताबो को रौंदा तुमने,
आज जवानी को बदनाम किया,
और इरादों को रौंदा तुमने,
अगर किताबे छोड़ कर,
कोई पत्थर उठाता है तो सोच,
उसकी गैरत और उसके खुद से किए
वादों को रौंदा तुमने।

तुम्हे फिक्र कहा से होगी किसी की,
तेरी नजरों में तो रोजगार मांगना धिक्कार है।
अगर कोई रोटी के लिए सड़क पर आ जाए
तो तेरी नजरों में वो देश का गद्दार है,

कोई सच्चाई तो दिखाता नही क्योंकि तू जानता है,
नफरती बीज से चलता तेरा कारोबार है,
कभी वक्त के गिरेबान में झांककर देखना,
तू भी उतना ही गद्दार है,
जितना की जिनसे देश होता शर्मशार है।

कोई तो सुध ले लो हम युवाओं की ,
हम अपना अधिकार तो ही मांग रहे हैं,
हजार बहाने हैं तुम्हे सत्ता में आने के ,
पर हम अपनी जिंदगी चलाने के लिए,
तो केवल रोजगार ही तो मांग रहे हैं।

हम कोई अपराधी तो नही जो लाठियां चलाते हो
हमको ही मानते हो देश का रक्षक,
और हम पर ही गोलियां चलाते हो ।
मां भारती अब तुम्ही न्याय करो।
वो तमाशबीन है बस शोर मचाने वाले हैं।

(सुमित कश्यप)
कनिष्ठ सहायक
जिला एवं सत्र न्यायालय, अम्बेडकरनगर

दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ, उत्तर प्रदेश
सशक्त संगठन समर्थ कर्मचारी
स्वागतम नव वर्ष, मन आँगन नव हर्ष, क्षण क्षण
नव संघर्ष, संघ उमंग नव विमर्श, पा जीवन उत्कर्ष
नए उमंग और उत्साह के साथ आप सभी को
नूतन वर्ष
की असीम शुभकामनाएं
आपका स्नेहिल
भागवत शुक्ल
प्रांतीय संयुक्त सचिव
दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ
उत्तर प्रदेश
वरिष्ठ सहायक
(जनपद न्यायालय, बस्ती)
सम्पर्क सूत्र :- 9936595999

आप सभी देशवासियों को
नववर्ष
2023
HAPPY NEW YEAR
की
हार्दिक शुभकामनाये
ऋषि यादव
अध्यक्ष
दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ, फर्रुखाबाद

देशप्रेम

प्राण तजे पर हार न मानी, रक्षा की है आन की।
सदा वीरों पर गर्व करेगी माटी हिंदुस्तान की।।
सिंध की रक्षा में जिसने, बाजी लगा दी जान की,
गाथा हम नहीं भूले है, दाहीर के बलिदान की।।

स्वतंत्रता के प्रथम समर में, प्रथम आहुति प्राण की,
मंगल पांडे थे बलिदानी, रक्षा की अभिमान की।

जतिन,सुभाष को याद करें हम, बोली जिनकी इंकलाब की।
खुदीराम की शहादत देखी, धन्य धरती बंगाल की,

बहरों को बम से था सुनाया, लाज रखी सम्मान की,
राजगुरु, सुखदेव, भगत सिंह, परम्परा बलिदान की।

आजाद और अशफाक बताएं, गाथा है बलिदान की।
देश के जो काम न आए, जिंदगी किस काम की।।

चाफेकर, फड़के थे गरजे, परवाह की न परिवार की,
भारत माँ का ऋण है चुकाया, गाथा है सम्मान की।।

सियाचिन और कारगिल में, रक्षा करते मान की,
अनगिनत वीरों की भूमि, मेरे भारत महान की।।

खून दे कर सींची बगियाँ, आजादी हमारे नाम की,
सदा वीरो पर गर्व करेगी, माटी हिन्दुस्तान की।
सदा वीरो पर गर्व करेगी, माटी हिन्दुस्तान की।।

(नवलकिशोर व्यास)
वरिष्ठ लिपिक,
जिल्हा न्यायालय, यवतमाल,महाराष्ट्र

मितता

मित्र हमारा ऐसा हो,
संकट में राह दिखाए,
अंधियारे में उजियारा हो।
मित्र हमारा ऐसा हो।

समय जिसे भुला न पाए,
एक पत्तल में दोनों खाये,
राव रंक का भेद न माने,
कृष्ण सुदामा जैसा हो,
मित्र हमारा ऐसा हो।।

विपत काल मे दौड़ के आये,
मृत्यु से जो लड़ जाए,
अंतिम साँस तक साथ निभाये,
कर्ण महारथी जैसा हो।
मित्र हमारा ऐसा हो।

दूर रहे पर साँसों में बसता,
याद में रहता चेहरा हँसता,
आस मिलन की सदा जगाये,
मेरे मित्रों जैसा हो।

नवलकिशोर व्यास
वरिष्ठ लिपिक,
जिल्हा न्यायालय, यवतमाल,
महाराष्ट्र

खुशियां बेशुमार नही

माना की जिंदगानी में गम है बहुत,
खुशियां बेशुमार नही
पर दो घड़ी मुस्कुरा न सके,
इतने तो बीमार नहीं
डूबने वाले के लिए
तिनके का सहारा बेकार नहीं
और तिनका भी ना पा सके,
इतने तो हम लाचार नहीं
क्या हुआ जो कोई साथ नहीं ,
क्या हम खुद के मददगार नहीं
जब तक सांसे चलती है ,
जीना इतना दुश्वार नहीं
माना की वक्त नाजुक है,
और मौसम खुश गवार नहीं
पर एक झटके में बिखर जाए
इतने तो हम सुकुमार नहीं

मनीष कुमार त्रिपाठी
वरिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, वाराणसी

लिखनी है कुछ बातें, जो रह जाती हैं
दिल और दिमाग के तारों में, उलझ कर
नहीं निकाली जा सकती, आसानी से
या यूं कहूं मुनासिब ना होगा।

उन्हें निकाल कर,
कागज़ पर उकेर देना
मानसिक यातनाओं के,
थपेड़ों के सहारे
बहती रहती हैं, कुछ बातें
अंतःमन की धार में।

नावों की भांति, जैसे कोई मल्लाह
उफनती लहरों में, नाव को
सम्हाल कर खेते हुए
किनारे पर लगाता है,
एक रात के लिए।

वैसे ही मैं, इस उलझे हुए मन को
सम्हाल कर ले आता हूं,
किनारे पर हर शाम
अगले दिन की, उफनती लहरों से
फिर तो वाकिफ होना है।

फिर वही मन, उफनती नदी
और मझधार में फंसी नाव से
मुखातिब जो होना होता है,
हर रोज किनारे लगाने के लिए।

विजय कुमार पाण्डेय
जिला एवं सत्र न्यायालय,
बुलन्दशहर

साज़ ए गम पर मोहब्बत के गीत गाऊंगा ।
अब ना कोई झूठी कसम उठाऊंगा ।।
जुस्तजू जिसको पाने की की थी कभी ।
बहुत मुश्किल है कि उसको भूल पाऊंगा ।।

उसकी चाहत में मर मर के जिए जाऊंगा ।
किया है गर कोई वादा उसे निभाऊंगा ।।
उसके आंचल के तले जो दिन रात कटे ।
न भूला था, ना भूला हूं, ना भूल पाऊंगा

शैलेन्द्र कुमार चौधरी
सेवानिवृत पेशकार
जनपद न्यायालय, उन्नाव

कोई मीठी मीठी सी गज़ल गुनगुनाऊंगा ।
बंद आंखों में फिर एक नया ख्वाब सजाऊंगा।।
उसके मखमली गेसुओ की घनी छांव को ।
नामुमकिन सा है कि भूल पाऊंगा ।।

शायद एक कहानी सा याद आऊंगा ।
अबकी टूटा तो बिखर जाऊंगा ।।
उनकी झील सी गहरी आंखों में "शैलेंद्र"।
तब नही डूबा था लेकिन अबकी डूब जाऊंगा।

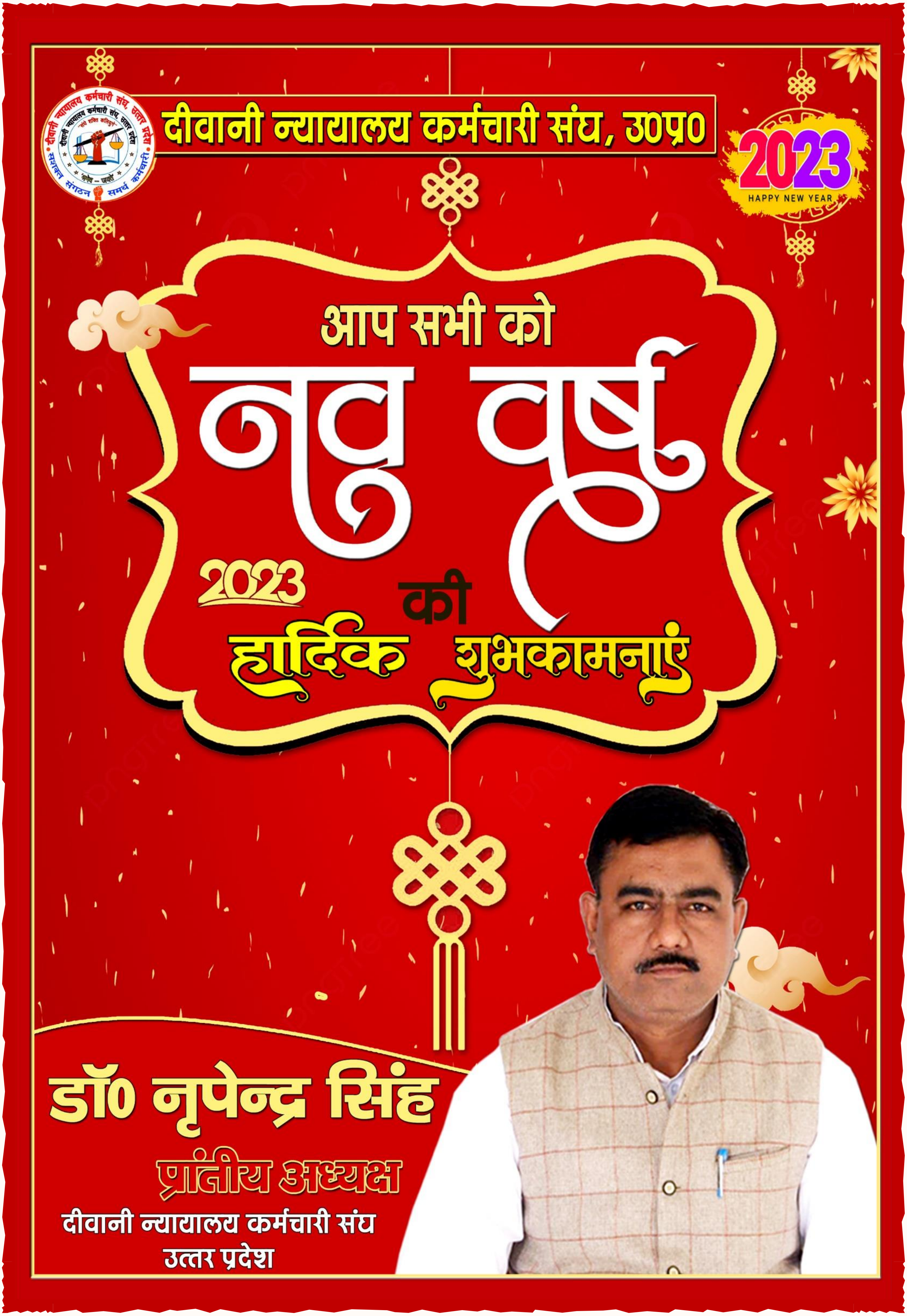
दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ, उ0प्र0
2023
HAPPY NEW YEAR
आप सभी को
नव वर्ष
2023
की
हार्दिक शुभकामनाएं
डॉ0 नृपेन्द्र सिंह
प्रांतीय अध्यक्ष
दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ
उत्तर प्रदेश

सभ्य व्यक्ति के लिए एक नसीहत

सभ्य व्यक्ति के लिए एक नसीहत है कि अभद्र, असभ्य व्यक्ति के मुंह न लगें, क्योंकि ऐसा व्यक्ति स्वयं को सर्वश्रेष्ठ समझता है और उसे अभिमानवश अपने से अधिक ज्ञानवान व्यक्ति कोई दूसरा नहीं दिखाई देता, इसलिए वह हितों के टकराव होने पर अथवा अपनी बात ऊंची करने के लिए आपसे छोटी-छोटी बातों पर भी कभी भी अभद्रता कर सकता है। जिसका जीता जागता उदाहरण आपके व्हाट्सअप ग्रुपों पर देखने को भी मिलता है। चाहे व्यक्ति के बस में स्वयं कुछ करना भले न हो लेकिन वह दूसरो के किये गये कार्यों में कमी निकालने में सबसे आगे नजर आएगें, बात-बात में बिना मांगे अपने विचार रखेगें, यदि सत्य बात कह दो तो आपसे वेवजह अभिमान में उलझने/झगड़ने लगेगें।

ऐसे व्यक्तियों को अगर संसार का सम्राट भी बना दिया जाए और ऐसो आराम के सभी संसाधन वस्तु दे दी जाए उसमें भी वह कमी निकाल कर अपने को सर्वश्रेष्ठ घोषित करने में तनिक देर नहीं लगाएगें। ऐसे स्वघोषित बुद्धिजीवियों से अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए बचने की कोशिश करनी चाहिए। असभ्य लोगों पर कोई भी टिप्पणी करने से बचें। उनसे कभी भूले से भी तर्क वितर्क बिल्कुल भी ना करें। ओशो ने कहा है कि :-

"मौन साधना का एक महत्वपूर्ण सूत्र है। किसी को भी बदलने में अपनी ऊर्जा बरबाद मत करो। अपनी सारी ऊर्जा का उपयोग स्वयं को रूपांतरित करने के लिये करो। तुम्हारा रूपांतरण बहुत सारे लोगों की मदद करेगा, तुम्हारे तर्क किसी की मदद नही कर सकते। इसलिए जितना हो सके मौन रहो और स्वस्थ्य रहो"

असभ्य लोगों से तर्क वितर्क करने के बजाए आप सभ्य लोगों के लिए या वंचित लोगों के लिए कुछ अच्छा कर सकते हो तो वह करें, ऐसे व्यक्तियों पर ध्यान देने से बेहतर है कि अपनी ऊर्जा को सार्थक क्षेत्र में लगाए और मानवता के लिए आगे आए। सदैव सकारात्मक रहें।

शिवम सिंह
कनिष्ठ लिपिक
जनपद न्यायालय, हरदोई

काव रे दहेजवा-कब तक ते लेबे जान रे?

काव रे दहेजवा, कब तक ते लेबे जान रे,
हम बाप हई कहिले, ना ले हमरो परान रे।
काव रे दहेजवा, कब तक ते लेबे जान रे?

जिनगी भर हम कमइली,
आधे ही पेट खइली।
गोलियावे ला दहेजवा,
घरवा बनल वीरान रे।
काव रे दहेजवा, कब तक ते लेबे जान रे?

बिटिया के हम पढ़इली,
जिनगी ओकर सजइली,
धीरे-धीरे ता, उहो हो गइली गुणगान रे।
काव रे दहेजवा, कब तक ते लेबे जान रे?

अहसास हमरो हो गइल,
बिटिया समान हो गइल,
शादी कराइब ओकर,
हम दिन-ढेकाना ठान के।
काव रे दहेजवा, कब तक ते लेबे जान रे?

खोजाये लागल शादी,
बिटिया के हो आबादी,
खुश रहे उ हमेशा पत्नी (माँ) कहे,
सुन ला तू (बाप) खोल कान रे।
काव रे दहेजवा, कब तक ते लेबे जान रे?

अच्छा सा घर खोजाइल,
समधी (ससुर) रहे फरमाइल,
लाखों में कैश, बाइक, सोने कै अंगूठी और
माला (सोने) 10 ग्राम रे।
काव रे दहेजवा, कब तक ते लेबे जान रे?

एतना सारे दहेज,
कैसे ली हम सहेज?
हम बिटिया पैदा कइली,
तू कइके पैदा बेटा,
काहे करे गुमान रे?
काव रे दहेजवा, कब तक ते लेबे जान रे?

गर बिटिया पैदा कइल हा पाप,
ता लोगवा समझी एके शाप,
न पैदा होई बिटिया जग में,
ई जग (संसार) बनी सूनसान रे।
काव रे दहेजवा, कब तक ते लेबे जान रे?

शादी त हा आबादी,
पर कइसे बनल बर्बादी,
न दे पइली ढेर दहेज,
यही ला पतिये (पति) बनल शैतान रे।
काव रे दहेजवा, कब तक ते लेबे जान रे?

सुधर जा 'अनिल' लोग,
शादी न हो वियोग,
'अनिलवा' कहेला सबसे,
माँ, बहन, पतनिये (पत्नी) हिया अभिमान रे।
काव रे दहेजवा, कब तक ते लेबे जान रे?
कब तक ते (दहेज) लेब जान रहे।

अनिल कुमार दूबे
रीडर
जिला एवं सत्र न्यायालय,
सिद्धार्थनगर

सगरो धरती पियराइल बा,सरसों खूब फुलाइल।
तीसी चाना धानी-धानी,उखिया पोर रसाइल।
लहकत फूल केराय उजरका,खेतवा मोर अंगराइल।
रसिक किरवना रस के
चूसें,मधुरस-मधु-मधुआइल।
चढ़ते अगहन पवन बसंती,हेमंती लुलुआइल।
मातल चिरई चुरमुन चंहके,लचकत सांझ ललाइल।
हरियर लुग्गा पहिनि के धरती,पोरे-पोर भराइल।
देखि सुघरता सिहकत अम्बर,बरसें ओस नहाइल।

रात चनरमा बारें बत्ती,दिनभर सुरुज लुकाइल।
माघ क बदरी अवसर खोजें,पुरुवा के संग आइल।
दिशा-दिशा में छितिराइल बा,बरसत बूंद मोहाइल।
झरत पराग-परागित मह-मह,मनवां बाय डेराइल।
कठिन किसानी जांगर पीसत,महंग खाद छिंटाइल।
हाड़-तोड़ जाड़ा आ मेहनत,कइसों खेत सिंचाइल।
भरल सीवान लगल बा गोंहू,देखत पीर पराइल।
ओला-पाला लील न लेवे,मनवां बा अंउजाइल।

बरिस-बरिस क इहे बा रोकड़,
खेती जवन बोआइल।
भाग-जोग हो जइहें बूझा,पूंजी इहे भेंटाइल।
बर-बियाह बेटी क होखे,नीमक तेल किनाइल।
नात-हिताई रोग-दवाई,कापी-फीस दियाइल।
सारी-झुल्ला आजन-बुन्ना,अनजे बेंचि लिआइल।
तर-तिउहार आ मेला-ठेला,
मरनी-जियन जो आइल।
बिनु करजा ना पूरा होखे,खेती इहे कहाइल।
तर-तरकारी घरे क होखे,तब्बे बुझा खवाइल।

बर-बथुआ क साग आ राई,
अगहन पूस खोंटाइल।
महंग आलू कीनी कइसे,
अबहीं कहां खनाइल।
मुफुत क राशन तेल मिलत बा,
देखि चुनाव बंटाइल।
फिर के पूछी ये मोर भइया,जतीये-जाति सुनाइल।
जाति क नेता बनिके आवें,नारा लगत भुलाइल।
गर-गरीब क नेता के बा,नइखे कभों भेंटाइल।
हम त बुझलीं जनते दोषी,जतीये वोट दियाइल।
जइसन नेत बरक्कत ओइसन,बुझलीं जवन
लिखाइल।।

राकेश कुमार पाण्डेय
हुरमुजपुर,सादात
गाजीपुर, उत्तर प्रदेश

स्वाभिमान के आँगन में
अन्याय के खिलाफ
एक मुकद्दमा
अंकुरित हुआ ।
जहाँ मरने के दस वर्ष बाद
मृतक को स्वर्ग से बुलाया गया
बकायदे रजिस्ट्री कराया गया।
अंकुरण के पश्चात
खाद -पानी के रुप में
सारे ग्राह्य सबूत उसकी जड़ों में डाला गया
क्योंकि जड़ें खाती है
पूरा पेड़ लहलहाता है।
सत्य का पथ
आलोकित करने के लिये
ताकि सत्य लहलहा उठे
बोल पड़े सत्य
लेकिन हर तारीख पर
वह तड़फड़ाता रहा
कभी हर्जे सहित संशोधन
कभी आधिवक्ता शोक
कभी हड़ताल
कभी उसकी मर्जी
जैसे तारीख ही उसका सब कुछ हो
नियति बन गयी है तारीरव ।
पहले मेरे माता - पिता ने
उसे रोपा और सींचा
वह चल बसे
फिर मैने उसे पुष्पित
पल्लवित करने की कोशिश की
मै भी चल बसूँगा
फिर मेरा लड़का हो सकता है
कहीं से सुन जाय कि
सत्य पराजित नही होता
परेशान होता है
इसी सत्यमेव जयते की आशा में
परेशानी मोल ले
शायद वह भी न रहे ...।
आखिर व्यादेश प्रार्थना पत्र
खाकर अत्यन्त स्वस्थ हो गया है
मेरा लाडला सात सौ अठ्ठानवे अट्ठासी।
पता नहीं क्यों
अन्ततः इजलास पर आकर निश्चिन्त
होकर सो जाता है
चैन की नींद
अगले तारीख तक
कभी निर्णित न होने के निमित्त।
फिर-फिर परेशान करने के लिये
ताकि दुनिया जान ले कि
सत्य पराजित नही होता वह तो
केवल परेशान होता है ।
भूत, भविष्य, वर्तमान के
ढ़हते आलम्बों पर जब टिक जाता है
तब कहीं निर्णय मिल पाता है।

डॉ0 कुमार विनोद
सेन्ट्रल नाज़िर
जनपद न्यायालय, बलिया

बचपन की यादें

बचपन के दिन कितने अनमोल थे,
जब खेलते हम गोल-गोल थे।
न कोई पाठ न कोई पढ़ायी,
बस दोस्तो से खेल-खेल में होती लड़ाई।
बारिश में पैरों से छप-छप करके,
खुश हो जाया करते थे।
पापा के प्यार मॉ की दुलार से,
जन्नत का एहसास पाया करते थे।
कितना अच्छा लगता,
मॉ के डॉट से रूठ के सो जाया करते थे
और मॉ के हाथ नींद में
हमको सहलाया करते थे।
बचपन में हम भी कितने अमीर थे,
जब बालू, मिट्टी का घर बनाया करते थे,
खुद के जहाज-हेलीकॉप्टर उड़ाया करते थे।
याद है बचपन के वे मेले,
जहॉ बस देखते रह जाते थे, खिलौनें के ठेले।
वे बचपन की यादें कितनी है खास,
जब सबकुछ आसनी से पा जाया करते थें।

अभिषेक यादव
आशुलिपिक
जनपद न्यायालय, झांसी

हो जाओ सावधान !
कोरोना का,
एक और दौर आने को है।
नैसर्गिक प्रकोप फिर से
छाने को है ।।

ना जानें कितनों के आंखो में आसूं होगें,
ना जाने कौन-कौन,
अब जाने को है,
हो जाओ सावधान..

मास्क लगाओ, डिस्टेंस बनाओ,
हेल्दी चीजें खाने में खर्च करो,
इम्यून सिस्टम बढ़ाने में खर्च करो ,

न जाने क्या - क्या,
फिर तबाह होने वाला है,
अब तो मानव जाति का ऊपर वाला ही
रखवाला है ।।
हो जाओ सावधान !

लवकुश
आशुलिपिक
जनपद न्यायालय,
बहराइच

'एक अच्छे दोस्त लाखों रिश्तेदार से बेहतर है'

जिंदगी में एक ऐसा दोस्त जरुर होना चाहिए
जिससे आप जब चाहें कॉल कर सकें
मैसेज कर सकें, सलाह-मशवरा ले सकें
सुख-दुःख बाँट सकें, डांट सकें, लड़ सकें
कंधे पर सिर रख कर रो सकें, खुलकर हँस सकें
घूम सकें, जब चाहें मिल सकें, बेझिझक होकर
निःसंकोच सब कुछ उसे बता सकें
बिना इस बात की परवाह किये
कि सामने वाला व्यक्ति क्या सोचेगा...?
अगर ऐसा दोस्त आपके पास है तो
वाकई आप दुनिया के सबसे खुशनसीब इंसान हैं.

हो सके तो किसी के अच्छे दोस्त बनिए,
किसी को सुनने का प्रयास करिए
क्योंकि अधिकांश लोग अकेलेपन के
अवसाद से ग्रसित हैं.

आये दिन आत्महत्याएँ होती हैं,
कभी सोचा है क्यों.?
क्योंकि इनके पास सुनाने वाले तो बहुत हैं
पर सुनने वाला कोई नहीं...!

नई शुरुआत नई कहानियां बन जाएगी नई दास्तां ए जिन्दगी लिख जाएगी

मुश्किलों का दौर सामने आएगा
जिंदगी का नया अध्याय बनाएगा

जिंदगी का सिलसिला इस साल भी जारी रहेगा
रिश्तों का बनना टूटना रिश्तों पर भारी रहेगा

इंसान ही इंसान को गिराता रहेगा
इंसान ही इंसान साथ निभाता भी रहेगा

नए साल के साथ लोग भी बदल जाएंगे
कुछ उठेंगे तो कुछ गिरते हुए दिख जाएंगे

नफरतों के दौर में भी प्यार का एहसास होगा
कही साथ तो कही अपनो से विश्वाश घात होगा

साल के साथ लोगों की भावनाएं भी बदल जाएंगी
कुछ अच्छी तो कुछ बुरी बन कर रंग दिखाएगी

जिंदगी जैसी है वैसी ही चलती जाएगी
कही धूप तो कही छाव भी आएगी।

(ऋषि यादव)
अध्यक्ष
दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ उ०प्र०
शाखा-फर्रूखाबाद
सह-सम्पादकः उद्घोष त्रैमासिक ई-पत्रिका

बहन

एक बहन अपने भाई के लिए होती है,
कीमती उपहार।

कभी-कभी बच्चो सी शरारत,
तो कभी मां सा प्यार।

हमारी कामयाबी पर होती है,
हम से भी ज्यादा खुश।

नाकामी के वक्त समेट लेती है,
हमारे सारे दुःख।

उम्रभर की दोस्ती का बहनो से मिलता है वरदान,
बरसाए अपने भाई पर प्यार और करती है गुमान।

हर दिन करते शुक्रिया अपनी बहनों को हम,
पास न होके भी जिनका प्यार कभी ना होता कम।

खुशकिस्मत है वो जिनकी बहने करती हैं,
उन्हें हर पल याद।

उनकी जिंदगी रहे खुशनुमा
बस यही है हमारी फरियाद।।

साज़िद अली
जिला एवं सत्र न्यायालय,
वाराणसी

पतंग

आज बड़ी शिद्दत से याद आ रहे मुझे
ओ बरगद के पेड़ के नीचे
छोटी सी गुमटी में रखे पतंग
और गफूर चाचा
एक जमाना था जब नदी के
इस पार और उस पार
दिन भर लड़ा करती थी पेंचे
तब अपनी पतंगों के लिए
बड़े मशहूर थे गफूर चाचा
पर हाय री! शहरी संस्कृति
तुमने निगल डाले वो पुराने खेल
और छीन लिया कितनो के मुह से निवाले
मैं भूल नही पाता उस मंजर को
जब कितने टूटे-बिखरे से दिखे थे गफूर चाचा
फिर वो न जी सके ज्यादा
कट गई उनके जीवन की डोर
फिर भी उनकी खुली आंखे
एकटक आसमान की ओर ताकते हुए
शायद इस उम्मीद में कि
फिर से लड़ेगी पेंचे और होगी पतंगबाजी
उन्हें देख ऐसा लग रहा था मुझे
मानो ढूढ़ रहे हो आकाश में उड़ती कोई
पतंग...पतंग...

(सचिन शर्मा)
वरिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, जौनपुर

मैं डस्टबीन नहीं हूँ

मैंने देखा कि ब्रेड की एक्सपायरी डेट को बीते हुए दो दिन हो चुके थे। मैंने शॉप पर फोन करके फ्रेश ब्रेड मंगा ली और पूरे घर का ब्रेकफास्ट ब्रेड पर बटर लगाकर हो गया। लक्ष्मी दोपहर को काम करने आई तो उसे एक्सपाइरी डेट की ब्रेड पकड़ाते हुए मैंने बड़ी उदारता से कहा- "लक्ष्मी ब्रेड ले जा। शाम को बच्चों को चाय के साथ सेक कर खिला देना, और खुद भी खा लेना।"

लक्ष्मी ने ब्रेड को हाथ में पकड़ा, उसे उलट-पुलट कर देखा और डस्टबीन में डालते हुए बोली, "मेमसाब, मैं डस्टबीन नहीं हूँ, जो आप मुझे बीती हुई तारीख की ब्रेड दे रही हैं।"

मैंने आश्चर्य से पूछा, "अच्छा तो तुम पढ़ी-लिखी हो ?"उसने मेरी उदारता की धज्जियां उड़ाते हुए उत्तर दिया, "मेमसाब, चाहे मैं पढ़ी-लिखी नहीं हूँ, मगर अपना भला-बुरा जरूर पढ़ लेती हूँ।"

(1)

खलिश है दिलों में, दूरियां हैं दरमियां

सुलग रहे हैं अरमां ,पाबंदियां हैं दरमियां

करके अहद तोड़ने के, सब आदी हैं क्यों,

रिश्तो में इन दिनों, खुदगर्जियां हैं दरमियां

गले लगता है कौन, यहां आकर बार-बार

शक्ल पहचानी न गई, मदहोशियां हैं दरमियां

वो मिलने को गले, बेताब तो है मगर

गिला है आंखों की ,गुस्ताखियां हैं दरमियां

चाहत है दिलों में, अब ईद हो जाए

संगदिल जमाने की मगर दुश्वारियां हैं दरमियां

रूठना मनाना जेवर है ,इश्क के गहने का

शिकवे नहीं मोहब्बत है इश्कियां हैं दरमियां

(2)

कहने को सब दोस्त हैं ,दिखता सब में प्यार है

पर रहना जरा संभल के, हर शख्स यहां अंगार है

पहचान यहां आदमी की, है लिबास के रंग से

मुख्तलिफ मिजाज की यहां, चल रही सरकार है

कुदरत खुद भी हैरान है, देखकर आदमी का फसाद

ये तेरा और ये मेरा, किसका परवरदिगार है

जिंदगी गुजर जाए सुकून से, खुदा की रहमत है

वरना फरेबियों में हुआ ,आपस में करार है

दूसरों को रौंदकर आगे, निकल जाने की फितरत

आदमी कर रहा यहां, आदमी का शिकार है

पोशीदगी है आजकल, आदमी के ख्यालों में

दिखता हर कोई वाइज, दबे छुपे मैखार है

खुद से ही होकर शुरू, खुद में दफन होता हुआ

आदमी अपनी ही खुद ,बन गया मजार है

उकता गया है दिल तन्हा, खुद से बात करते-करते

हमजुबां मिलता नहीं कोई, भीड़ का गुबार है

क्यों मुकर जाते हैं, लोग अपने वादों से हर पल

अजीब सी है जेहनियत, अजीब सा दयार है

तमाशागाह है दुनिया ये, उसी पुराने तमाशे की

तमाशे में निगराँ के, हर कोई किरदार है

(योगेश कुमार शर्मा)
वरिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, मथुरा

(1)

फिर वही शाम, वही चाय।
पर, तुम नहीं.........?
जगह वही, हम भी वही,
पर तुम नहीं..........?
क्या बदल गई मैं,
या मेरा प्यार ?
पर, तुम नहीं ....?
फिर वही शाम, वही चाय।
मिठास वही है चाय की,
खुश्बू भी वही चाय की।
अभी भी गरमाहट है,
तुम्हारे अहसास की,
पर, तुम नहीं.........?
फिर वही शाम, वही चाय।
क्यों होठों तक आते-आते,
हाथ कँपकँपाते हैं ?
देख प्याला चाय का,
आँसू छलक जाते हैं।
“अटल” विश्वास था,
हर शाम के साथ का।
हर आहट पर देखती हूँ,
शायद तुम हो,
पर, तुम नहीं.........?
फिर वही शाम, वही चाय,
पर, तुम नहीं.........?
आखिर क्यों, तुम नहीं ?

(2)

हरि का वास रहे
कण कण में।
वो चाहे जो कर दे
क्षण में।
राम करें
उद्धार सभी का ।
मन लगता है पर
रावण में ।
करना है जो
कर दिखलाओ।
कहना क्या केवल
भाषण में ?
जो होगा
देखा जायेगा।
दुश्मन बचे न देखो
रण में।
“अटल” ब्याह
राजी से करना।
नहीं मान्यता मिले
हरण में।

अटल राम चतुर्वेदी
वैक्तिक सहायक
जिला एवं सत्र न्यायालय,
मथुरा

हे मेरे प्रभु

मैं अभी थका नहीं हूँ,
मैं अभी हारा नहीं हूँ,
निराश भी नहीं हूँ,
मगर मेरे प्रभु ध्यान रखना,
जब थकने, हारने और निराश होने लगूँ ,
तो सरलता से अपने श्री चरणों में बुला लेना

जगत में सभी हैं मेरे मगर
मैं किसी का भी नहीं हूँ,
यह मैं बखूबी मानता हूँ प्रभु,
मगर जब जगत साथ छोड़ दे,
सरलता से मेरा हाथ थाम लेना प्रभु
हे मेरे प्रभु,

जुडवा नहीं अकेला पैदा किया था मुझे आपने,
इसलिए मुझसे कोई जुड़ा नहीं,
साथी तो बहुत हैं मगर
हमसफर कोई मुझे मिला नहीं,
जब सभी साथ छोड़ दें मेरे प्रभु ,
सरलता से अपने श्री चरणों में बुला लेना प्रभु।

महेश कुमार गुप्ता
सेवानिवृति प्रधान सहायक
जिला एवं सत्र न्यायालय,आजमगढ़

माँ की साड़ी में बेटी
कितना कुछ
लिए चलती है।
कंधे की पिन से लगा
मातृत्व
कमर में खोंसा
वात्सल्य
पल्लू में थिरकता
प्रेम
प्लीट्स में उलझती सी
नोंक झोंक .....
कभी रोकती है तो
अगले पल
धकिया कर
आगे ले जाती है।
धागे में लिपटी
उसकी छुअन
खुशबू बन दुलराती है।

माँ की साड़ी बेटियों को
बड़ा नहीं होने देती
बल्कि गोद में ढक
धूप से बचा
दायित्व दे
कह उठती हैं...
चल ना! मैं हूँ संग।
माँ संग होती है
वैसे ही जैसे
पहले कदम पर संग थी
पहली चोट पर संग थी
पहले डर पर संग थी
पहली परीक्षा पर संग थी
और अब भी
पहली साँस से आखिरी साँस तक
संग है और रहेगी।

प्रीति पाठक
वरिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, गौतमबुद्धनगर

तेरा बचपन कहाँ?
क्या हम सबने किया तबाह ?

बचपन एक अद्भुत समय, जब इंसान समाज की अच्छाइयों और बुराईयों से दूर होकर स्वतंत्र आकाश की गोद में गोता लगाता है। प्रत्येक माँ-बाप की कोशिश होती है कि वो अपने नौनिहालों को एक स्वस्थ बचपन दे। लेकिन एक बड़ा तबका ऐसी कोशिशों से दूर रहता है, और उसे हम, छोटू, गोलू, राजू, पोरवा न जाने क्या-क्या संबोधित करते हैं। उन्हें कोई फिक्र भी नहीं, न उनकी किसी को फिक्र। हम इस ठंड में बिस्तर में छिपे रहने को विवश लेकिन छोटू को तो भट्ठी तैयार करनी है, आलू उबालने है, गर्मागरम समोसा बनाना है, झाड़ू-पोंछा कर कुर्सियां-मेज साफ करना है, 10 बजने वाले हैं, कचहरी वाले आने वाले हैं, वकील साहब का 1:30 बजे लंच है, आदि, अरे-अरे शाम को तो इसी होटल में मम्मी - पापा अपने लाडले अहान को Birthday Wish करने वाले हैं, पर गोलू को तो पता ही नहीं कि उसका भी कभी जन्मदिन मनाना किसी ने सोचा होगा, एक खिलखिलाते बचपन को देखकर एक खिलता बचपन क्या सोचता होगा, हम आप एहसास नहीं कर सकते हैं।

हम सभी में ये साहस नहीं। वहीं शिक्षा का अधिकार, DPSP, मौलिक कर्तव्य, श्री सत्यार्थी जी का बचपन बचाओ आंदोलन मात्र छलावा लगता है। आखिर में इन जलपान केंद्रों का क्या कोई रेग्युलेशन नहीं, एक लड़का/बालक अगर कार्य करता है यहाँ तो उसके गरिमा का कोई मोल नहीं, वही अगर 'अनिल' होटल पर गिलास धोकर जीविकोपार्जन करे तो, सामाजिक प्रतिष्ठा धूमिल।

क्या गजब संयोग है न कि हम खुद अपने बच्चे की खुशियां केवल घर पर संजोते हैं, हम अपनों के साथ खुद सहज हैं और होटल पर सुपर पावर 'ए' पोरवा, चल मेज साफ कर।

आखिर में ये सब हमारे सामाजिक मूल्यों की संरक्षणवादी मानसिकता बोध कराती हैं। "अपना बेटा और दूसरों की बीबी सभी को अच्छी लगती है" मात्र से उक्त विषय का स्पष्टीकरण हो जाना पर्याप्त तो नहीं, लेकिन एक कोशिश हो सकती है।

संक्षेप में, इस छोटू के दर्द को कोई समझता, काश! अरे वो स्कूल जा सकता है, वो भी जरूरी नहीं कि सुबह - सुबह छोटू होटल को सजाये-संवारे। आखिर में दर्द कोई तभी समझे जब अनुभव हो। सहानुभूति और समानुभूति में अन्तर है। अनिल तो समानुभूति करने का अधिकार रखता है।

अनिल कुमार दूबे
रीडर
जिला एवं सत्र न्यायालय,
सिद्धार्थनगर

अर्द्धांगिनी

सुनो तुम कैसे पढ़ लेती हो,
मेरे चेहरे पर लिखी उदासी
कैसे जान लेती हो कि,
मैं खरीद नही पाया,
आज फिर तुम्हारे सपने!
और फिर नही भर पाया,
बच्चों की कॉपियों पर उकेरी,
तस्वीरों में चटख रंग !
तुम्हें कैसे पता,

मैं आज फिर वही नकली हंसी,
और झूठी दिलासा के सिवा,
बाजार से कुछ भी नहीं लाया !
कैसे मेरी आज की नाकामी,
चूल्हे की आग में जलाकर,
शाम की रोटी बना लेती हो !
तुम सच मे जादूगरनी हो अर्द्धांगिनी,
घर में कुछ हो न हो,
फिर भी,
कुछ न कुछ पका लेती हो ?

अमित कुमार द्विवेदी
प्रधान सहायक
जिला एवं सत्र न्यायालय, हरदोई

न्यायपालिका एवं न्यायालय कर्मचारी कि स्थिति

न्यायालय के पावन मन्दिर का करता नित्य श्रृंगार है ये,
करने को खुद का तन मन अर्पित रहता हरदम तैयार है ये,

न्यायालय पालिका, हमारे लोकतन्त्र का तीसरा स्तम्भ, हमारे मौलिक अधिकारो का सतत प्रहरी, यही वो संस्था है जो हमे हक से, सम्मान से जीने का सबल प्रदान करती है, और इस महान संस्थान के क्रियान्वन करते है इससे जुड़े हुये लोग इसमें लगे कर्मचारी, जो कहलाते है न्यायालय कर्मचारी। एक व्हाइट कालरधारी।

न्यायपालिका और उसके कर्मचारीयो को यदि एक साथ समझने का प्रयास करे तो इसका बहुत ही जीवन्त और सजीव दृश्य प्रस्तुत करती इस छोटी सी कहानी का जिक्र करना बहुत आवश्यक होगा- एक बार एक विशालकाय जहाज में सैकड़ो यात्रि अपने मन में उम्मीदो और आशाओं का समन्दर समेटे बड़े ही धैर्य के साथ सवार, अपने मंजिल को अग्रसर थे तभी उनमे से एक युवक जिसका नाम जैक था बड़े गौर से लहरो को चीरता हुआ जहाज को आगे बढ़ता देख अपने बगल खड़े अपने पिता से कहता है-

जैक- पिताजी! इतना विशालकाय जहाज समुन्द्र के लहरो को चीरता हुआ इतना आसानी से कैसे चल रहा है।

जैक के पिता मुस्कुराते हुए जैक को एक कैबिन में ले गये, जहाँ गद्देदार कुर्सी पर बैठे एक व्यक्ति को दिखाते हुए कहा -

जैक के पिता- बेटे! वो देखो ये है हमारे इस बड़े से जहाज के हमारे योग्य कैप्टन, यही इस जहाज को चला रहे, इन्ही के सहारे हम अपने मंजिल को पहुँचेगे।

जैक अपने पिता के उत्तर से अपनी जिज्ञासा को शान्त कर वापस आने लगा तभी एक बुजुर्ग जो इनके वार्तालाप को सुन रहे थे बड़े ही सहज भाव से बोले जैक क्या तुम्हे सच में जानना है कि ये जहाज इतनी आसानी से कैसे लगातार आगे बढ़ता जा रहा है तो आओ मेरे साथ, और वो जैक और उसके पिता को जहाज के बेसमेन्ट में लेकर गये, जहाँ सैकड़ो लोग पसीने में तर बतर हाथ में चप्पू लिये लगातार चप्पू चला रहे थे, जिन्हे देखकर जैक व उसके पिता के आँखे आश्चर्य से खुली रह गयी और हैरान भाव से बुजुर्ग की ओर देखने लगे, तब बुजुर्ग ने कहा-

बुजुर्ग – जैक ऊपर जो तुमने देखा वो सत्य है कि हमारे इस जहाज को हमारे कैप्टन चला रहे है किन्तु यहाँ जो तुम देख रहे हो यह भी सत्य है बिना इनके भी यह जहाज नहीं चल सकता, दोनो एक दूसरे के बिन अधूरे है।

जी हाँ, यहि रिस्ता है न्याय पालिका और न्यायालय कर्मचारी का, न्यायपालिका रूपी इस जहाज को चप्पू चला चलाकर निरन्तर गतिमान, इस महान संस्थान के कर्मचारी रखते है, किन्तु आज आजादी के 75 साल होने के बाद भी जैस जैसे सभी जन को बस जहाज का ऊपर का हिस्सा ही दिखाया जाता है, बेसमेन्ट के नीचे का हिस्सा आज भी अपने सामान्य जरूरतो और अधिकारो के लिए संघर्ष कर गुमनाम रहा है, जहाँ एक ओर इस विशाल जहाज पर निरन्तर यात्रियों (मुकदमों) का भार बढ़ता जा रहा है वहीं इसके बेसमेन्ट में लगे कर्मचारियों की संख्या उस अनुपात में बहुत ही कम बढ़ी, फिर भी निरन्तर उसी रफ्तार या कह ले उससे कही बेहतर रफ्तार के साथ उस उतिरिक्त बोझ की परवाह किये बिना बेसमेन्ट में लगे कर्मचारी जहाज को गतिमान रखे हुए है। पर आखिर कब तक इन्ही हालात में? और क्यों? नदी में रहकर यदि प्यास से व्याकुल रहे तो इसमें दोष नदी का ही माना जाता है, खाना के भन्डारे में बैठकर यदि कोई भूखा रह जाये तो इसमें दोष व्यवस्थापक को माना जाता है वैसे ही यदि न्याय के मन्दिर में रहते हुए अन्याय का सामना करना पड़े तो प्रश्न चिन्ह कहाँ उठेगा यह विचार करना अति आवश्यक है।

नियम, अनुशासन, और कर्तव्यनिष्ठता के डोर से बन्धे हुए हम न्यायालय कर्मचारी दशकों से केवल अनुनय विनय करते आये है और आगे भी यही करते रहेगे, क्योंकी धैर्य, अनुशासन, हमारा सर्वप्रथम और अतिआवश्यक गुण माना जाता है एक न्यायालय कर्मचारी के रूप में, और हम अपने इस गुण के विपरीत भी नहीं जाना चाहते किन्तु समस्त जिम्मेदार गणों को हमारी समस्यायें हमारी आधारभूत आवश्यकतो को समझते हुए उसके निराकरण का हर सम्भव प्रयास करना चाहिए **क्योंकि चप्पू चलाने वाले हाथों के बिना जहाज पर लाख योग्य कप्तान हो जहाज जडवत ही रहेगा।**

विवेक कुमार
(प्रधान सहायक)
जनपद न्यायालय, अमेठी
सम्बद्धः मा० उच्च न्यायालय, इलाहाबाद।

माँ

ममता की आँचल में, ममता की छांव में।
मन मेंरा रमता है, उस छोटे से गाँव में।।
मन मेरा माँ की गोद में जब सोता है,
स्वर्ग के जैसा एहसास मुझे होता है,
माँ मुझे अपने गले से लगा लेती है,
दिल मेरा जब किसी बात पे रोता है।

हर गली पे मेरी माँ आती है बचाव में।
मन मेंरा रमता है, उस छोटे से गाँव में।।
हर रोज माँ का मुझको वो समझाना,
पापा का मेरे लिए नए उपहार लाना,
भाइयों का मुझसे वो लड़ाई करना,
वो बहनों से हाथ पे राखी बंधवाना।

साज़िद अली
जिला एवं सत्र न्यायालय,
वाराणसी

अच्छा नहीं लगता कुछ भी, उस प्यार के अभाव
मन मेंरा रमता है, उस छोटे से गाँव में।।
मेरी खुशियो के लिए हर रोज मंदिर जाना,
हर काम से पहले दही और चीनी खिलाना
घर से दूर जाते वक्त मेरे ए ''साज़िद''
दरवाजे के पीछे छुपके माँ का आँसू बहाना
भवसागर पार करना है इस संस्कार के नाव में।
मन मेंरा रमता है, उस छोटे से गाँव में।।

विधवा
(एक काल्पनिक कहानी)

दिसम्बर महीने की कड़कड़ाती ठण्डी की रात जब कोई भी आदमी अपने विस्तर से बाथरूम जाने के लिए भी दस बार सोंचता है, ऐसी ठण्ड भरी रात में एक औरत नंगे पैर खुले आसमान के नीचे बैठी सिसकियां ले रही थी। उसकी सिसकियों से पूरा वातावरण ही करूण रस में डूब गया था।

प्रिया, हां प्रिया ही नाम है, इस औरत का। मां-बाप की इकलौती लाडली लड़की, मां-बाप की आंखों का तारा और घर में सदा उछल कूद करके कोलाहल मचाने वाली आज वही बाला मुंह छिपाकर रो रही है। हृदय में जब ज्यादा कष्ट हो तो शायद रो लेने से बहुत राहत मिल जाती है, शायद इसी का प्रयास कर रही है यह सुकुमारी बाला।

तभी एक गर्म हाथ उसके कंधे पर पड़ा तो वह न चाहते हुए भी एक बार पलट कर उसकी तरफ देखना पड़ा। पीछे प्रिया की मां खड़ी थी। एक बार उसके मन में आया कि मां के आंचल में मुंह छिपाकर एक बार जोर से रोकर दिल का पूरा खुमार निकाल लें, मगर वह मां की तरफ बड़े ध्यान से देखी। अंधेरी रात में भी वह मां के चेहरे को देख कर यह पता लगाना चाहती थी कि वह, वही मां है जो आज से दो साल पहले की या कोई और है। मां बोली, बेटी ठण्डी में बाहर क्यों बैठी हो, चलो अंदर, ठण्ड लग जायेगी।

प्रिया की इच्छा हुई कि मां का हाथ झटक दे और बोले कि वह ठीक है। उसकी किस्मत में जो लिखा है वो होकर ही रहेगा। वह चाहे जहां रहे, मगर मां के प्यार भरी आवाज सुनकर वह कुछ बोल न सकी और खड़ी हो गयी। मां ने उसका हाथ पकड़ना चाहा मगर वह तब तक तेज कदमों से चलते हुए एक छोटे-से कमरे में चली गयी।

सुबह के करीब चार बज रहे थे। अभी चारों तरफ काला अंधेरा छाया हुआ था। लोग रजाई में दुबके हुए खर्राटे ले रहे थे। मगर प्रिया के आंखों से नींद सैकड़ों क्या लाखों कदम दूर थी, तभी धीरे से उसके कमरे में एक पदचाप सुनाई पड़ा। जो धीरे-धीरे प्रिया के पास ही आ रहा था। वह आंखें मूंद रही थी। तभी धीरे से आवाज आई-बेटी उठो, मंदिर नहीं जाओगी। अभी उजाला हो जायेगा तो मंदिर में नहीं जा पाओगी। प्रिया आखें मूदे पड़ी रही। सोते हुए आदमी को तो आप जगा सकते हैं, लेकिन जो जागकर भी सो रहा है उसे आप कैसे जगायेंगे। मां उसे हिला-हिला कर जगाने लगी, मगर प्रिया ने आखें न खोली। वह मंदिर क्यों जाये। भगवान ने उसे दिया ही क्या है? जब वह ठीक से चलना भी नहीं जानती थी तभी उसकी शादी कर दी गयी। आज जब वह थोड़ा सोंचने-समझने के काबिल हुई तो पता चला कि जिसको आज तक वह देख न सकी थी आज उसकी विधवा है। समाज ने उसे भगवान के मंदिर में जाने पर भी रोक लगा दिया है। क्या भगवान के दर्शन करने से मंदिर अपवित्र हो जायेगा! तो वह क्यों जाये चुपके से मंदिर में पूजा करने। वह कहीं नहीं जायेगी। भगवान को जो करना था वह कर ही चुके हैं, बाकी उन्हें जो करना होगा करे, उससे कोई मतलब नहीं।

मां ने जब प्रिया को हिला कर भी न उठा सकी तो उन्होंने प्रेम से उसके माथे पर हाथ फेरा और बोली- क्या हुआ बेटी........ मंदिर नहीं जाने का मन है, कोई बात नहीं कल चलना। जो प्रिया को हिलाकर झकझोर

कर भी नहीं उठा सका वही प्रिया को मां के एक प्रेम भरे स्पर्श ने जगा दिया। प्रिया मां के गोद से लिपट गई और आसूओं की एक श्रृंखला मां के ऑचल को भिगोने लगी।

प्रिया दिन भर अपने कमरे में पड़ी रहती थी। उसे बाहर घूमना मना था। क्योंकि यदि कोई सुबह-सुबह किसी विधवा के मुंह को देख लेता है तो उसका दिन खराब हो जायेगा, यदि कोई कहीं जा रहा है और विधवा रास्ते में आ गयी, तो उसका काम न होगा। दुनिया इक्कीसवीं शताब्दी में पहुंच गई है, मगर आज भी हमारे गांवों में सोलहवीं शताब्दी के आडम्बरों, कर्म-काण्डों को ढ़ो रहे हैं। जिस प्रिया के मुख की तुलना लड़के चॉद-सितारों से करते, आज उसी मुख को इस तरह ग्रहण लग गया है कि कोई भूल कर भी उस मुख को नहीं देखना चाहता।

एक लगभग इक्कीस साल का लड़का दौड़ते हुए घर में प्रवेश किया। घर में चारों तरफ सन्नाटा फैला हुआ था। वह जोर से चिल्लाया ताऊ जी........। मगर किसी तरफ से कोई भी आवाज न आई। वह कदमताल करते हुए आगे बढ़ा, तभी उसे प्रिया दौड़ते हुए दिखाई दी। प्रिया को देखकर देवेश दंग रह गया। सफेद साड़ी में लिपटी प्रिया किसी लाश की तरह दिखाई दे रही थी। प्रिया के ओठों पर मुस्कान उभर आया, मगर एक ही क्षण में मुस्कान ऐसे गायब हो गया जैसे बादल में चॉद छुप गया हो और वह जितनी तेजी से देवेश के पास आयी थी, उससे कहीं तेजी से पलटी और भागी। देवेश ने दौड़कर उसे पकड़ लिया। प्रिया की आंखो से सावन की तरह बरसात होने लगी।

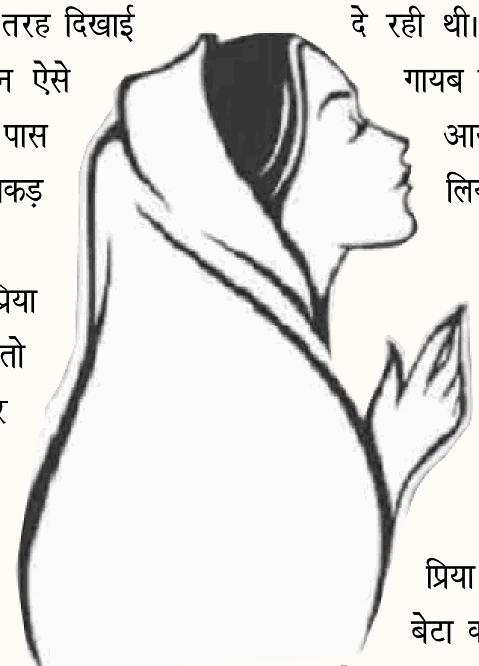

देवेश बोला- प्रिया तुम्हे ये क्या हुआ है? तुम इस तरह कैसे हो गयी........ अरे तुम्हारे तो लम्बे खूबसूरत बाल क्या हुए........। प्रिया देवेश से अपना हाथ छुड़ाकर तेजी से भाग गई। तब तक प्रिया के पिताजी आ गये। देवेश ने जाकर ठाकुर साहब के पैर छुए। ठाकुर साहब दुखी दिख रहे थे।

देवेश बोला ताऊ जी प्रिया को क्या हुआ वो कैसे दिख रही है।

ठाकुर साहब बोले- बेटा क्या बताऊं, मेरी बेटी की किस्मत में शायद अब उम्र भर रोना ही लिखा है। देवेश बोला-लेकिन प्रिया को हुआ क्या है।

तब तक प्रिया की मां आ गई। आखों से आंसू की एक मोटी धार बहाते हुए बोली-बेटा क्या बताऊं, प्रिया की शादी हम लोगों ने उसके बचपन में ही कर दिया था। प्रिया उस समय ठीक से कुछ जानती समझती भी न थी। हमारे गांव के पुरोहित जी ने बताया था कि यदि प्रिया की शादी उसके पांच साल के अंदर न कर दोगे तो प्रिया जिन्दा न रहेगी। इसीलिए प्रिया के पिताजी ने इसकी शादी छोटे में ही कर दिया था। ये बात तो बेटा गांव के सभी लोग जानते हैं। बेटा अभी कुछ दिन पहले प्रिया के पति का देहान्त हो गया। प्रिया अब विधवा है और तुम्हें तो पता है कि बेटा विधवा को बाल रखना, मंदिर जाना मना है। देवेश बोला- लेकिन ये सब नियम तो खुद ताऊ जी ने ही बनाये हैं......... क्या प्रिया मंदिर नहीं जाती।

प्रिया की मां के गालों पर आंसू की बूंदे एक रेखा बनाती हुई ठोढ़ी से नीचे गिर रही थीं, जिसे पोछना शायद वह मुनासिब नहीं समझती थी। आंसू बहाते हुए वह बोली- बेटा जो आदमी हमेशा पूरे गांव में देवता

के समान पूजा जाता रहा हो और जिसने गांव की सब छोटे-बड़े नियम कानून बनाया हो, आज भी वह उसी नियम कानून का पालन कर रहा है, उनको बेटी के आंसू भी न पिघला सकी। तब तक देवेश प्रिया के कमरे की तरफ मुड़ा। प्रिया जमीन पर बिछी चटाई पर बैठी रो रही थी। देवेश प्रिया के बगल में बैठ गया। देवेश बोला- प्रिया मुझे सब पता चल गया कि तुम्हारे साथ क्या हुआ। प्रिया जब हम तुम साथ में पढ़ते थे, तभी से मैं तुम्हें चाहता था, मगर तुम्हारी शादी हो चुकी थी, इसलिए मैंने कभी तुमसे कुछ कहा नहीं। मगर प्रिया आज मैं तुमसे कहता हूँ- क्या तुम मुझसे शादी करोगी? प्रिया एक बार सिर को ऊपर उठाकर देवेश की तरफ देखी और अगले पल सिर को झुका ली। उसका ऐसा करना देवेश को अच्छा न लगा।

देवेश बोला- प्रिया तुम कब तक इस तरह रोते-रोते अपनी जिन्दगी काटोगी, अभी तुम्हारी उम्र ही क्या है। आज मैं तीन साल बाद गांव आया हूँ। तुममे और पहले की प्रिया में कितना अंतर हो गया है। प्रिया मैं तुमसे शादी करने के लिए तैयार हूँ। बस तुम एक बार हॉं कर दो। मैं ठाकुर साहब और मॉ जी को मना लूंगा। तब तक ठाकुर साहब दरवाजे पर खड़े होकर गरजे- देवेश तुझे तो मैं अपने लड़के की तरह चाहता था, मगर तू तो बड़ा निकम्मा निकला। गांव की ही लड़की पर बुरी नजर रखता है और भी ठाकुर विजयेन्द्र की लड़की पर। तुझे मैं जिन्दा नहीं छोडुंगा। तब तक प्रिया की मॉ आ गई। प्रिया की मॉ बोली- देवेश तू यहां से चला जा। तुझे पता है, इस गांव में विधवा की दुबारा शादी नहीं होती। तू यहां से चला जा, नहीं बहुत बड़ी अनहोनी हो जायेगी।

देवेश कमरे से निकल कर चला गया। रात के करीब दो बज रहे थे। चारों तरफ काले अंधेरे ने अपना डेरा जमा रखा था। तभी शाल ओढ़े हुए अंधेरे में कोई चला जा रहा था। कुछ क्षण पश्चात् वह गंगा के तट पर खड़ा हो गया। उसने गंगा जी में उतर कर जल को सिर से लगाया और हाथ जोड़ कर बोली- हे गंगा मॉ प्रणाम! आज मैं अपनी जननी मां को छोड़कर तुम्हारे गोद में आना चाहती हूँ, क्योंकि समाज में मैं कोई ऐसा काम करके अपने माता-पिता की इज्जत को धूल में नहीं मिलाना चाहती। अगर मैं यहां पर रहूंगी तो माता-पिता को जीवन भर कष्ट देती रहूंगी। इसलिए हे मॉ मुझे अपनी गोद में ले लो। यह बोलकर वह गंगा जी में और तेज गति से बढ़ी और गंगा मां ने उसे अपने गोद में हमेशा के लिए ले लिया।

दिनेश कुमार गुप्ता
वरिष्ठ सहायक
जिला एवं सत्र न्यायालय, कौशाम्बी

बुड़बक बुढ्ढा

मैं बुड़बक बुढ्ढा हूँ बच्चों
जीवन ऐसे ही काटूँगा
प्यार करूँगा कभी मैं तुमको
कभी कहीं भी डाटूँगा।

बुरा कभी तुमको लग जाय
फिर भी तुमको है सहना
बात भले की कहूंगा हरदम
क्योंकि मुझको है कहना

जीवन ये अनमोल न बिगड़े
बात तुम्हारी काटूँगा
प्यार करूँगा कभी मैं तुमको
कभी कहीं भी डाटूँगा।

मैं बूढा हो गया हूँ सोचा
आज तुम्हारी नजरों में
कैसे छोडूं बीच भंवर में
नाव तुम्हारी पचड़ों में

कपड़े चाहे जितने फाड़ो
उनको ही मैं सादूंगा
प्यार करूँगा कभी मैं तुमको
कभी कहीं भी डाटूँगा।

मान भले तुम मुझे न देना
बुरा नहीं मैं मानूँगा
बड़े हुए करते नादानी
बात ये ऐसे जानूँगा

पता चले न चले कि तुमको
आशीष ये ऐसे बाटूंगा
प्यार करूँगा कभी मैं तुमको
कभी कहीं भी डाटूँगा।

राजेश बंसल
(वरिष्ठ सहायक)
जनपद न्यायालय,
मथुरा

बहुत दिनों से स्कूटी का उपयोग नही होने से, विचार आया OLX पे बेच दे.. कीमत Rs 30000/- डाल दी बहुत आफर आये 15 से 28 हजार तक। एक का 29 का प्रस्ताव आया। उसे भी waiting में रखा। कल सुबह काल आया, उसने कहा- "साहब नमस्कार", आपकी गाडी का **add** देखा। पसंद भी आयी है। परंतु 30 जमाने का बहुत प्रयत्न किया, 24 ही इकट्ठा कर पाया हूँ। बेटा इंजिनियरिंग के अंतिम वर्ष में है। बहुत मेहनत किया है उसने। कभी पैदल, कभी सायकल, कभी बस, कभी किसी के साथ। सोचा अंतिम वर्ष तो वह अपनी गाडी से ही जाये। आप कृपया स्कूटी मुझे ही दीजिएगा। नयी गाडी मेरी हैसियत से बहुत ज्यादा है। थोडा समय दिजीए। मैं पैसो का इंतजाम करता हूँ। मोबाइल बेच कर कुछ रुपये मिलेंगें। परंतु हाथ जोड़कर कर निवेदन है साहब, मुझे ही दीजिएगा।" मैने औपचारिकता में मात्र बोलकर फोन रख दिया। कुछ विचार मन में आये। वापस काल बैक किया और कहा आप अपना मोबाइल मत बेचिए, कल सुबह केवल 24 हजार लेकर आईए, गाडी आप ही ले जाईए वह भी मात्र 24 में ही। मेरे पास 29 हजार का प्रस्ताव होने पर भी 24 में किसी अपरिचित व्यक्ति को मै स्कूटी देने जा रहा था। सोचा उस परिवार में आज कितने आनंद का निर्माण हुआ होगा। कल उनके घर स्कूटी आएगी। और मुझे ज्यादा नुकसान भी नहीं हो रहा था। ईश्वर ने बहुत दिया है और सबसे बडा धन समाधान है जो कूट-कूटकर दिया है।

अगली सुबह उसने कम से कम 6-7 बार फोन किया, साहब कितने बजे आऊ, आपका समय तो नही खराब होगा। पक्का लेने आऊं, बेटे को लेकर या अकेले आऊ। पर साहब गाड़ी किसी को और नही दिजीएगा। वह **2000, 500, 200, 100, 50** के नोटों का संग्रह लेकर आया, साथ में बेटा भी था। ऐसा लगा, पता नही कहा कहा से निकाल कर या मांग कर या इकठ्ठा कर यह पैसे लाया है। बेटा एकदम आतुरता और कृतज्ञता से स्कूटी को देख रहा था। मैने उसे दोनो चाबियां दी, कागज दिये। बेटा गाडी पर विनम्रतापूर्वक हाथ फेर रहा था। रुमाल निकाल कर पोछ रहा था। उसनें पैसे गिनने कहा, मैने कहा आप गिनकर ही लाये है, कोई दिक्कत नहीं। जब जाने लगे, तो मैने उन्हे 500 का एक नोट वापस करते कहाँ, घर जाते मिठाई लेते जाएगा। सोच यह थी कि कही तेल के पैसे है या नही। और यदि है तो मिठाई और तेल दोनो इसमें आ जायेंगे। आँखों में कृतज्ञता के आंसु लिये उसने हमसे विदा ली और अपनी स्कूटी ले गया। जाते समय बहुत ही आतुरता और विनम्रता से झुककर अभिवादन किया। बार बार आभार व्यक्त किया। दोस्तो जीवन में कुछ व्यवहार करते समय नफा नुकसान नहीं देखना चाहिए। अपने माध्यम से किसी को क्या सच में कुछ आनंद प्राप्त हुआ यह देखना भी होता है।

बृजलाल मौर्या
वरिष्ठ सहायक
जनपद न्यायालय, जालौन

लड़के ! हमेशा खड़े रहे, खड़े रहना उनकी मजबूरी नहीं रही बस !
उन्हें कहा गया हर बार, चलो तुम तो लड़के हो खड़े हो जाओ।
छोटी-छोटी बातों पर वे खड़े रहे, कक्षा के बाहर स्कूल विदाई पर।
जब ली गई ग्रुप फोटो, लड़कियाँ हमेशा आगे बैठीं,
और लड़के बगल में हाथ दिए पीछे खड़े रहे।
वे तस्वीरों में आज तक खड़े हैं..

कॉलेज के बाहर खड़े होकर, करते रहे किसी लड़की का इंतजार,
या किसी घर के बाहर घंटों खड़े रहे, एक झलक, एक हाँ के लिए।
अपने आपको आधा छोड़ वे आज भी वहीं रह गए हैं....

बहन-बेटी की शादी में खड़े रहे, मंडप के बाहर बारात का स्वागत करने के लिए।
खड़े रहे रात भर हलवाई के पास, कभी भाजी में कोई कमी ना रहे।
खड़े रहे खाने की स्टाल के साथ, कोई स्वाद कहीं खत्म न हो जाए।

खड़े रहे विदाई तक दरवाजे के सहारे और टैंट के अंतिम पाईप के उखड़ जाने तक।
बेटियाँ-बहनें जब तक वापिस लौटेंगी, वे खडे ही मिलेंगे....

रवि विश्वकर्मा
(कनिष्ठ सहायक)
जनपद न्यायालय, फर्रूखाबाद

वे खड़े रहे पत्नी को सीट पर बैठाकर,
बस या ट्रेन की खिड़की थाम कर वे खड़े रहे,
बहन के साथ घर के काम में, कोई भारी सामान थामकर,
वे खड़े रहे ।
माँ के ऑपरेशन के समय ओ. टी. के बाहर घंटों, वे खड़े रहे
पिता की मौत पर अंतिम लकड़ी के जल जाने तक।
वे खड़े रहे। अस्थियाँ बहाते हुए गंगा के बर्फ से पानी में।

लड़कों ! रीढ़ तो तुम्हारी पीठ में भी है,
क्या यह अकड़ती नहीं...?

कर्मचारी को ही अपनी कमर कसनी होगी

उत्तर प्रदेश के हर वर्ग का कर्मचारी वर्तमान में अपनी पेंशन पाने के लिए संघर्ष कर रहा है। सत्ताधारी दल के कानों पर तो जूं नहीं रेंग रही है, लेकिन हर एक वक्त सत्ताधारी दल की बांह मरोड़ने वाला विपक्ष भी जैसे इस मुद्दे पर बेहोशी की गोली खाकर स्वप्न देख रहा है। लगता है कर्मचारियों को ही अपनी इस मांग के लिए कमर कसनी होगी। केन्द्र सरकार कर्मचारियों द्वारा निरन्तर पुरानी पेंशन की मांग को देखते हुए पेंशन प्रावधानों में बार बार संशोधन कर रही है। यह कर्मचारियों के दबाव का ही नतीजा है जो सरकार मजबूर को पेंशन प्रावधानों पर सुधारों के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। अन्य कई प्रदेशों के कर्मचारियों की संकल्पबद्धता के कारण आज कई राज्यों में पुरानी पेंशन बाहल हो चुकी है। आज तक जो कर्मचारी ऐसा सोचते थे कि ये कभी संभव नहीं है, उनके अंदर भी पुरानी पेंशन बहाल होगी ऐसा विश्वास जग गया है। मैं एक और बिंदु की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। नियम के अनसार पूरे सेवाकाल में अधिकतम 300 अर्जित अवकाश जमा हो सकते हैं, जो 10 वर्ष के निरंतर सेवा काल में पूरे हो जाते हैं तथा उसके बाद जो भी अवकाश अर्जित अवकाश होते हैं वह लैप्स हो जाते हैं। काफी पहले यह व्यवस्था थी कि प्रतिवर्ष 30 अर्जित अवकाश के बदले में कर्मचारी को 1 माह का वेतन मिल जाता था इससे कर्मचारी का उत्साह वर्धन भी होता था और अल्प वेतन भोगी कर्मचारी का आर्थिक बोझ भी कम हो जाता था तथा दूसरी ओर सरकार को भी आयकर मिल जाता था। सरकार को इस ओर ध्यान आकृष्ट करना चाहिए तथा इस व्यवस्था को पुनः लागू करना चाहिए जिससे लैप्स होने वाले अवकाश से बचा जा सके तथा कर्मचारी और सरकार दोनो के आर्थिक हित सध सके।

राजीव भटनागर
संयुक्त सचिव
दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ, संभल
सदस्य कार्यकारिणी : दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ, उ०प्र०

रिसोर्ट मे शादियां - नई सामाजिक बीमारी

हम बात करेंगे शादी समारोहो में होने वाली भारी-भरकम व्यवस्थाओं और उसमें खर्च होने वाले अथाह धन राशि के दुरुपयोग की ! सामाजिक भवन अब उपयोग में नहीं लाए जाते है, शादी समारोह हेतु यह सब बेकार हो चुके हैं, कुछ समय पहले तक शहर के अंदर मैरिज हॉल में शादियां होने की परंपरा चली परंतु वह दौर भी अब समाप्ति की ओर है! अब शहर से दूर महंगे रिसोर्ट में शादीया होने लगी है! शादी के 2 दिन पूर्व से ही ये रिसोर्ट बुक करा लिया जाते हैं और शादी वाला परिवार वहां शिफ्ट हो जाता है। आगंतुक और मेहमान सीधे वही आते हैं और वहीं से विदा हो जाते हैं। इतनी दूर होने वाले समारोह में जिनके पास अपने चार पहिया वाहन होते हैं वहीं पहुंच पाते हैं! और सच मानिए समारोह के मेजबान की दिली इच्छा भी यही होती है कि सिर्फ कार वाले मेहमान ही रिसेशन हॉल में आए!! और वह निमंत्रण भी उसी श्रेणी के अनुसार देता है, दो तीन तरह की श्रेणियां आजकल रखी जाने लगी है, किसको सिर्फ लेडीस संगीत में बुलाना है !, किसको सिर्फ रिसेप्शन में बुलाना है ! किसको काकटेल पार्टी में बुलाना है ! और किस वीआईपी परिवार को इन सभी कार्यक्रमों में बुलाना है!! इस आमंत्रण में अपनापन की भावना खत्म हो चुकी है! सिर्फ मतलब के व्यक्तियों को या परिवारों को आमंत्रित किया जाता है!! महिला संगीत में पूरे परिवार को नाच गाना सिखाने के लिए महंगे कोरियोग्राफर 10-15 दिन ट्रेनिंग देते हैं! मेहंदी लगाने के लिए आर्टिस्ट बुलाए जाने लगे हैं!

हल्दी लगाने के लिए भी एक्सपर्ट बुलाए जाते हैं! ब्यूटी पार्लर को दो-तीन दिन के लिए बुक कर दिया जाता है ! प्रत्येक परिवार अलग-अलग कमरे में ठहरते हैं जिसके कारण दूरदराज से आए बरसों बाद रिश्तेदारों से मिलने की उत्सुकता कहीं खत्म सी हो गई है!! क्योंकि सब अमीर हो गए हैं पैसे वाले हो गए हैं! मेल मिलाप और आपसी स्नेह खत्म हो चुका है! रस्म अदायगी पर मोबाइलो से बुलाये जाने पर कमरों से बाहर निकलते हैं ! सब अपने को एक दूसरे से रईस समझते हैं! और यही अमीरीयत का दंभ उनके व्यवहार से भी झलकता है ! कहने को तो रिश्तेदार की शादी में आए हुए होते हैं, परंतु अहंकार उनको यहां भी नहीं छोड़ता ! वे अपना अधिकांश समय करीबियों से मिलने के बजाय अपने अपने कमरो में ही गुजार देते हैं!! विवाह समारोह के मुख्य स्वागत द्वार पर नव दंपत्ति के विवाह पूर्व आलिंगन वाली तस्वीरें, हमारी विकृत हो चुकी संस्कृति पर सीधा तमाचा मारते हुए

दिखती हैं! अंदर एंट्री गेट पर आदम कद स्क्रीन पर नव दंपति के विवाह पूर्व आउटडोर शूटिंग के दौरान फिल्माए गए फिल्मी तर्ज पर गीत संगीत और नृत्य चल रहे होते हैं ! आशीर्वाद समारोह तो कहीं से भी नहीं लगते है। पूरा परिवार प्रसन्न होता है अपने बच्चों के इन करतूतों पर पास में लगा मंच जहां नव दंपत्ति लाइव गल-बहियाँ करते हुए मदमस्त दोस्तों और मित्रों के साथ अपने परिवार से मिले संस्कारों का प्रदर्शन करते हुए दिखते हैं! मंच पर वर-वधू के नाम का बैनर लगा हुआ होता है! अब वर वधू के नाम के आगे कहीं भी चि० और सौ० का नहीं लिखा जाता क्योंकि अब इन शब्दों का कोई सम्मान बचा ही नहीं इसलिए अंग्रेजी में लिखे जाने लगे है

हमारी संस्कृति को दूषित करने का बीड़ा एसे ही अति संपन्न वर्ग ने अपने कंधों पर उठाए रखा है, मेरा अपने मध्यमवर्गीय समाज बंधुओं से अनुरोध है आपका पैसा है, आपने कमाया है,आपके घर खुशी का अवसर है खुशियां मनाएं,पर किसी दूसरे की देखा देखी नही! कर्ज लेकर अपने और परिवार के मान सम्मान को खत्म मत करिएगा! जितनी आप में क्षमता है उसी के अनुसार खर्चा करिएगा, 4 - 5 घंटे के रिसेप्शन में लोगों की जीवन भर की पूंजी लग जाती है ! और आप कितना ही बेहतर करें लोग जब तक रिसेप्शन हाल में है तब तक आप की तारीफ करेंगे! और लिफाफा दे कर आपके द्वारा की गई आव भगत की कीमत अदा करके निकल जाएंगे! मेरा युवा वर्ग से भी अनुरोध है कि अपने परिवार की हैसियत से ज्यादा खर्चा करने के लिए अपने परिजनों को मजबूर न करें! आपके इस महत्वपूर्ण दिन के लिए आपके माता-पिता ने कितने समर्पण किए हैं यह आपको खुद माता-पिता बनने के उपरांत ही पता लगेगा!

दिखावे की इस सामाजिक बीमारी को अभिजात्य वर्ग तक ही सीमित रहने दीजिए! अपना दांपत्य जीवन सर उठा के, स्वाभिमान के साथ शुरू करिए और खुद को अपने परिवार और अपने समाज के लिए सार्थक बनाइए !

संतोष श्रीवास्तव
"सेवा निवृत : जनपद न्यायालय, आजमगढ़"
पूर्व प्रांतीय उपाध्यक्ष, *"अमूल्य निधि"*
दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ
उत्तर प्रदेश

न्याय विभाग में हमारी नियुक्ति ,
कल्पनाओं की अद्‌भुत शक्ति,
एक ऐसे पटल की जिम्मेदारी जहां
खाली पेट, रोटी के लिए
खुले तन, वस्त्र के लिए
टूटता परिवार, बसने के लिए
बह रहा आंसू, रोकने के लिए
दूसरों की खुशी, मिटाने के लिए
अपनी प्रभुता, दिखाने के लिए

आदि आदि कई प्रकार से लोग न्याय पाने के लिए आते हैं! जहां सर्वप्रथम हमें ही सामंजस्य बनाना पड़ता है! विभिन्न विचारधाराओं को एकसाथ एक ही समय पर सन्तुष्ट करने में अपने अन्दर उठी खीज को अपने अन्दर समेट लेने की मजबूरी मेरे साथ होती है! इन्हीं परिस्थितियों में समय अपनी गति से चलता रहता है और समय समय पर कसौटीयों पर हमें कसता रहता है! इतने में भी हम खुश इस बात पर रहते है कि आज सही रहा!

साहब, वकील साहब, सहकर्मी, मुवक्किल, फाइल, खुद से पूरे दिन हम कैसे कैसे जबावदेही के लिए आत्मकसरत करते रहते हैं यही सोचकर ही आधी रात तक की नींद खत्म हो जाती है! आत्म सन्तोष तो मुझे इतने पर हो जाता है कि चलो आज का पांच बज गया!

आफिस खुली, बाबू को बुलाओ
फाइल किधर, बाबू को बुलाओ
कवर फटा, बाबू को बुलाओ
पेश नहीं हुआ, बाबू को बुलाओ
वकील साहब कहां, बाबू को बुलाओ
जबकि फाइल आज लगी नहीं थी ये सब तो केवल वकील साहब के तारीख भूल जाने के कारण हुआ! मगर बाबू के कई जरूरी काम करने से छूट गये!

हां यह सब करना मेरी डियूटी है साहब पर इसी बीच बिना डांटे हमें सुन लिया जाय तो शायद मेरा समय बचे और आवश्यक काम भी ना भूले! पिछले कई साल से नववर्ष की अनन्त शुभकामनाओं के साथ यहीं से चले और यही रहें है।

एक बार फिर आप सबको नववर्ष की मंगलकामना और इस नये वर्ष में कुछ परिवर्तन की सम्भावना है, आप सभी को बहुत बहुत बधाई।

के0 के0 शुक्ल
जनपद न्यायालय,
श्रवावस्ती

ऐसा कोई काम करो
पिता जी का नाम करो।।
युवाओं में जोश नया है
नेता बनने का उदघोष नया है।।

कोई कहता बूथ मन्त्री
कोई कहता उप मन्त्री
कोई कहता महा मन्त्री

अब तो युवाओं का व्यापार है
युवा सोचे अब तो नईया पार है।।

परिवार न देखे मन्त्री
न देखे बाप की पटधारी
कपडों में उसके छेद हैं
खुलते उसके भेद हैं
ऐसा कोई काम करो
पिता जी का नाम करो

मां को गुमान हो
पिता को अभिमान
सर उठे सम्मान से
तुम्हारे ही नाम से
ऐसा कोई काम करो
पिता जी का नाम करो।।
यही है ।।

निशान्त कमल
जनपद फर्रूखाबाद

'जिगीषा'

धुंए की नही आग की जरूरत है,
सिसकारियों की नही,
हाहाकार की जरूरत है।
वक्त है तेज धार का,
सुस्तियाँ हमें ले डूबेंगी,
अब खंजर की नहीं,
तलवार की जरूरत है।
दरिया में डूबकर मर जायेंगे,
अगर तैरना न सीखा तो,
कर्मों का तूफान पैदा करो,
अब एक सैलाब की जरूरत है।
न जाने किस नाम से जी रहे हो,
तुम्हें नाम की परवाह नही,
अब रात में भी लड़ो,
तुम्हे एक पहचान की जरूरत है।

मनीष गाँधी
जनपद न्यायालय, बदायूं

ठंडी-ठंडी

सिहरन शुरु हुई जाड़े की
बच्चे,बूढ़े कप-कपाने लगे
मौसम का कोई ठीक नहीं
कब दात कट-कटाने लगे।

वर्दी अभी भी बन्द सभी की
सधारनतः ड्यूटी बजाने लगे
भीड़ बराबर बढ़ती मरीज की
अस्पताल अस्पताल बदलाने लगे।

चलते -चलते समय सिकुड़ गये
रात भी जल्दी आने लगे
शायद सूर्य भी डरता ठंड से
वह जल्दी ही सो जाने लगे।

सारे शरीर ने खोली ओढ़ ली
आंखे ठंड से टकराने लगे
आंखों की कोमल दृढ़ता देख
हड्डी भी चट-चटाने लगे।

ठंड की इतनी मार देखकर
दिमागी धुंध छट जाने लगे
सभी को ठंड से डट कर लडना
सब ही स्वेटर निकलवाने लगे।

सिपाही कलम का

मैं भी एक सिपाही कलम का
पन्ने पन्ने पर बैठा चोर
बादल जितनी साफ है, दिखती
बारिश उतनी ही घनघोर
नाक के नीचे चोरी होती
'विभिषण इधर,रावण उस ओर
रक्षा हेतु सिर्फ शब्द साथ में
कर्तव्य से बंधा हुआ चाहुओर
मैं भी एक सिपाही कलम का
पन्ने पन्ने पर बैठा चोर
हरकत सबकी देख रहा हूँ
नहीं कहा जाता कुछ और
इधर भी चोर, उधर भी चोर
सबकी नजरों में , मैं भी चोर
चारों कोनो को चक्कर देकर
हर रात को चाँदनी बनाते चोर
सुबह की पहली सूर्य किरण संग
कोशिश दिखने की उजला, पुर जोर
शब्द कलम की हथियार से घातक
खुद भी फस जाता मेच्योर
ए जग जो है अपराध से भरा
सिपाही कलम का चाहिए और।

(मारूति)
वरिष्ठ सहायक
जिला एवं सत्र न्यायालय, वाराणसी

Made by Mrs Saba Naz
W/o Anas Ansari
(Sr. Assistant, Distt. Court, Chitrakoot)
Assistant Teacher
Primary school Jakhni, Banda

Calligraphy graphic. touching the Gilaf-e-Qaaba and feelings of spirituality.

विगत कुछ दिन पहले मेरे अभिन्न मित्र बड़े भाई श्री प्रेम नारायण जी का आकस्मिक निधन मुझे झकझोर गया। एक बड़े भाई का हाथ मेरे सर पर रहता था वो हमेशा हंसते हुए कहते थे मैं हूं तुम्हारे साथ। जीवन में मृत्यु अटल है अविकल्पी और अनिवार्य है परंतु किसी की मृत्यु का सामना करने का सामर्थ्य कमजोर पड़ता जा रहा है मैने जितना बड़ा न्यायिक परिवार पाया है उसमे सबसे बड़ा दुख मेरा यही है कि अक्सर मुझे ऐसी कष्टपूर्ण सूचनाएं मिलती रहती है।

भाई प्रेम नारायण जी निश्चित ही कर्मयोगी थे क्योंकि आज भी अंतिम क्षणों में वे अपनी कर्मस्थली पर ही महाप्रयाण पर निकल गए कोर्ट में काम करते हुए एक कर्मयोगी अपनी अंतिम यात्रा पर गया, और सहकर्मी सहयोगी सबके सब हाथ मलते रह गए भाई प्रेम नारायण का जाना प्रांतीय संघ को भी बड़ी चोट दे गया क्योंकि वे सदैव संघ के प्रत्येक कदम में साथ होते थे।

विगत माह हमारे संघ के पूर्व प्रांतीय महासचिव नंद किशोर श्रीवास्तव जी के देहावसान की भी दुखद सूचना प्राप्त हुई, परमपिता से प्रार्थना करता हूं कि दोनो महान आत्माओं को अपनी शरण में स्थान प्रदान करे

निशब्द हूं, दुखद है लेकिन सत्य है।

शोक संतप्त
नरेंद्र विक्रम सिंह
प्रांतीय महासचिव
दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ
उत्तर प्रदेश

दिनांक 06 नवम्बर 2022 को दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ, उत्तर प्रदेश के तत्वाधान में न्यायालय के तीनों संघ यथा वैक्तिक सहायक संघ उत्तर प्रदेश एवं चतुर्थ श्रेणी न्यायिक कर्मचारी संघ उत्तर प्रदेश की संयुक्त बैठक की कुछ झलकियां

दिनांक 21 नवम्बर 2022 को संयुक्त संघ के प्रतिनिधि व श्रीमान् महानिबन्धक महोदय एवं श्रीमान् रजिस्ट्रा महोदय (निरीक्षण) मा0 उच्च न्यायालय, इलाहाबाद के साथ कर्मचारीगण की समस्याओं पर बैठक की कुछ झलकियां

उद्घोष त्रैमासिक ई-पत्रिका
सप्तम संस्करण

दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ, उत्तर प्रदेश की शाखा–मैनपुरी की नवनिर्वाचित कार्यकारिणी के शपथग्रहण समारोह की कुछ झलकियां

दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ, उत्तर प्रदेश की शाखा–सहारनपुर की नवनिर्वाचित कार्यकारिणी के शपथग्रहण समारोह की कुछ झलकियां

दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ, उत्तर प्रदेश

(राजाज्ञा सं0 1083/7-137, 17/27-1928 तथा संख्या 99/7139, दिनांक 22 जनवरी 1931 द्वारा मान्यता प्राप्त)

Website : www.dnksup.com, Email :-contact@dnksup.com

संगठन के माननीय सदस्यगण, उनके परिजनों, हित मित्रों एवं शुभचिन्तकों को नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं। बीते वर्ष में अधूरी रही आपकी खुशियां इस साल आपको मिल जाएं। पिछले साल मिले हुए दुःख जीवन में कभी सामने न आएं, इस साल आपको यश, वैभव, सम्पन्नता और खुशहाल जीवन मिले।

नूतन वर्ष की

हार्दिक शुभकामनाएं

2023

नरेंद्र विक्रम सिंह
प्रांतीय महासचिव

अभिषेक सिंह
वरिष्ठ प्रांतीय उपाध्यक्ष

संदीप चौहान
प्रांतीय संरक्षक

डॉ0 नृपेन्द्र सिंह
प्रांतीय अध्यक्ष